सरल ज्योतिष प्रवेश

ले० भृगुनाथ मिश्रा

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

सरल ज्योतिष प्रवेश

ज्योतिष सम्बन्धी बातें बताने के लिए पं० भृगुनाथ मिश्र जी ने एकदम सरलतम विधि से इस पुस्तक की रचना की है जिससे साधारण व्यक्ति भी इस विषय से पूरी जानकारी प्राप्त कर सकता है।

समर्पण

'सरल ज्योतिष प्रवेश' पुस्तक अपने पिता स्व० श्री राम लखन मिश्र, ज्योतिषाचार्य को सादर समर्पित करता हूं।

—पं० भृगुनाथ मिश्रा (ज्योतिषी)

सरल

ज्योतिष प्रवेश

लेखक

पं० श्री भृगुनाथ मिश्रा (ज्योतिषी)

मूल्य—१५-००

प्रकाशक :

रणधीर प्रकाशन हरिद्वार

अपनी ओर से

प्रस्तुत ज्योतिष पुस्तक 'सरल ज्योतिष-प्रवेश' का प्रकाशन एवं सम्पादन जिस ढंग से प्रकाशक ने किया है वह अति प्रशंसनीय एवं महानता का द्योतक है। ज्योतिष की अब तक प्रकाशित पुस्तकों में किसी भी लेखक ने सुगम तरीके से ज्योतिष सिखाने का प्रयास नहीं किया है। इस कमी को मद्दे-नजर रखते हुए तथा ज्योतिष के अधिक प्रसार एवं सरलता के लिए इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा हुई। मेरे अग्रज श्री शिव कुमार मिश्र जी ने मुझे इस पुस्तक को लिखने में बड़ा उत्साहित किया। घर बैठे मात्र एक सप्ताह में इस पुस्तक को पढ़ने से आप ज्योतिषी बन जायेंगे।

पाठको से अनुरोध है कि अगर कोई त्रुटि पायें तो हमें अपना सुझाव अवश्य भेजें।

— पं० भृगुनाथ मिश्रा
ज्योतिषी

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
अध्याय एक : ज्योतिष सम्बन्धी आवश्यक बातें	१-१०
अध्याय दो : पंचांग सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान की बातें	११-१६
—दिनमान रात्रिमान	११
—तिथि	११
—वार	१२
—नक्षत्र	१२
—योग	१३
—करण	१३
—तिथियों की संज्ञा	१५
—क्रूर तिथि	१५
—दग्धा तिथियां	१६
अध्याय तीन : जन्म कुण्डली की रचना कैसे करें ?	१७-२५
—इष्टकाल	१७
—भभोग	२१
—भयात	२३
—नक्षत्र एवं नक्षत्र चरण	२५
अध्याय चार : राशि का ज्ञान	२६-३०
—जन्म कुण्डली के द्वादश भावों को अंशों में व्यक्त करना	२८
—राशियों का स्वरूप	२८
—राशि और स्वामी	२९
अध्याय पाँच : ग्रह का ज्ञान	३१-३५
—ग्रहो का स्वरूप तथा मित्रता	३२
—ग्रहों की मूल त्रिकोण राशि	३३
—ग्रहों की उच्च नीच राशियां	३३
—उच्च नीच राशि चक्रम्	३४
—ग्रहों की दृष्टि	३५
अध्याय छह : जन्म लग्न	३६-३९
—जन्म लग्न निकालनें का प्रथम तरीका	३६
—जन्म लग्न निकालने का दूसरा तरीका	३७
—जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों के अंश	३८
अध्याय सात : चन्द्र स्पष्ट और महादशा का भुक्त भोग्य कैसे जानें ?	४०-५४
—महादशा ग्रह की जानकारी कैसे करें ?	४४

—ग्रह महादशा वर्ष ४५
—अन्तर्दशा ४६
—जन्म महादशा भुक्त व भोग्य वर्ष निकालने का तरीका ५१
—योगिनी दशा ज्ञान चक्रम ५३
— योगिनी महादशा कैसे ज्ञात करें ? ५४
अध्याय आठ : जन्म कुण्डली की परिचय ५५-६२
—बल साधन ५६
—भाव से क्या जानें ५६
—जन्म कुण्डली रचना की साधरण सुगम विधि ५८
—ग्रहो के अंश ६०
अध्याय नौ : फलादेश के सुगम नियम ६३-७८
—फलादेश के सुगम नियम ६३
—विंशोत्तरी महादशा फल ६९
—राहु तथा केतू सम्बन्धी अन्य योग ७१
—संतान योग ७२
—अन्ध योग ७२
—अधियोग ७२
—जन्म लग्न फल ७३
—ज्योतिष से सम्बन्धित योग ७५
अध्याय दस : ज्योतिष में मुहूर्त विचार ७९-११०
—चन्द्रमा ७९
—घातक चन्द्र ७९
—चन्द्रवास ८०
—नक्षत्र भोजन ८०
—लग्न का कालमान ८१
—समस्त शुभ कार्यो में वर्जनीय ८२
—राहु-काल ८२
—यात्रा में ग्राह्य नक्षत्र ८२
—यात्रा में वर्ज्य नक्षत्र ८३
—लोक प्रचालित निषेध ८४
—आवश्यक यात्रा में त्याज्य घड़ी ८४
—तिथि विषयक चिंतन ८४
—सूर्यवास ८५
—दिशा विदिशा में सूर्य प्रहर प्रमाण ८५

—सूर्य फल ८५
—यात्रा विचार ८५
—प्रस्थान ८६
—प्रस्थान में रखने योग्य वस्तु ८६
—प्रस्थान में दिन वर्ज्य पदार्थ ८७
—दिशाशूल ८७
—दिशाशूल भंग वस्तु सेवन ८७
—विजय योग ८८
—शिव घटिका मुहूर्त ८८
—महीनों से दिन रात्रि के मुहूर्त ८८
—कुछ आवश्यक मुहूर्त ९५
—नया पात्र मुहूर्त ९६
—वस्त्र धारण मुहूर्त ९६
—औषध ग्रहण का मुहूर्त ९७
—लोच करने का मुहूर्त ९७
—संवारा कराने का मुहूर्त ९७
—गुरूदर्शन या राजदर्शन मुहूर्त ९८
—संगीत सीखने का मुहूर्त ९८
—जातकर्म और नामकरण मुहूर्त ९८
—स्फुट मुहूर्त ९९
—प्रवेश के लिए मुहूर्त ९९
—दीक्षा के लिये मुहूर्त ९९
—विश्वाज्ञान १००
—नवग्रहों का विश्वा यन्त्र १००
—शनि की साढ़े साती १०१
—पृथ्वी सुती बैठी देखने की विधि १०१
—सर्वार्थ सिद्धि योग १०१
—स्थिर योग १०२
—राज योग १०२
—कुमार योग १०३
—भस्म योग १०४
—घात चक्रम् ११०
—तिथि व वार से बनने वाले योग ११०
—नक्षत्र व वार से बनने वाले योग ११०

ज्योतिष सम्बन्धी आवश्यक बातें

- परमाणु के दो भेद हैं —
  - (१) अणु
  - (२) त्रसरेणु
- दो परमाणु का एक अणु होता है ।
- तीन अणु का एक त्रसरेणु होता है ।
- तीन त्रसरेणु का एक कालत्रुटि होता है ।
- सौ त्रुटि का एक वेद होता है ।
- तीन वेद का एक लौ होता है ।
- तीन लौ का एक निमेष होता है ।
- तीन निमेष का एक क्षण होता है ।
- पाँच क्षण का एक काष्टा होता है ।
- पन्द्रह काष्टा का एक लघु होता है ।
- पन्द्रह लघु की एक नाड़ी होती है ।
- दो नाड़ी का एक मुहूर्त होता है ।
- छः मुहूर्त का एक यम होता है ।
- चार यम का एक दिन होता है ।
- नाड़ी को दंड कहा जाता है ।
- चार प्रहर का एक दिन होता है ।
- चार प्रहर की एक रात्रि होती है ।
- पन्द्रह दिन का एक पक्ष होता है ।
- दो पक्ष का एक मास होता है ।

- पक्ष दो होते हैं —

  (१) कृष्ण

  (२) शुक्ल

- कृष्ण और शुक्ल पक्ष क्रमशः पितरों की रात्रि और दिन है ।
- दो माह की एक ऋतु होती है ।
- छः माह का उत्तरायण होता है ।
- छः माह का दक्षिणायन होता है । उत्तरायण देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन देवताओं की रात्रि होती है ।

पंचांग सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान की बातें

दिनमान-रात्रिमान

पंचांग के प्रथम पृष्ठ में मास का कृष्ण पक्ष तथा द्वितीय पृष्ठ में मास का शुक्ल पक्ष दिया रहता है। सर्वप्रथम "दि० मा०" लिखा रहता है जिसका अर्थ होता है दिनमान अर्थात् सूर्योदय से सूर्यास्त तक की अवधि।

सूर्योदय से सूर्यास्त तक की अवधि को दिन कहते हैं तथा उसके बाद की अवधि को रात्रि कहते हैं। "दि० मा०" के नीचे लिखा हुआ समय घटी-पल में होता है। ६० घटी का दिन और रात (अहोरात्र) होता है। ६० में से दिनमान घटा देने पर रात्रिमान आ जायेगा। जैसे अधिक ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को दिनमान ३३/३८ है अर्थात् ३३ घटी ३८ पल है, उस दिन रात्रि का मान निकालना है तो ६० में से दिनमान को घटायें—

	घटी	पल	
	६०	००	
दिनमान	३३	३८	घटाया
शेष	२६	२२	

तिथि

दिनमान पंक्ति के बगल में १ से १५ या ३० तक खड़ी पंक्ति में अंक लिखे रहते हैं। इन को तिथि कहते हैं। एक पक्ष में १५ तिथि होती हैं। कृष्ण पक्ष की अंतिम १५वीं तिथि को अमावस्या कहा जाता है, क्योंकि उस

दिन रात्रि पूर्ण अन्धकारमय रहती है । शुक्ल पक्ष के अन्तिम १५वीं तिथि को पूर्णिमा कहा जाता है क्योंकि उस दिन रात्रि पूर्ण चांदनी युक्त रहती है। अमावस्या की १५वीं तिथि को ३० लिखा रहता है तथा पूर्णिमा की जगह १५ लिखा रहता है । तिथि की पंक्ति के बगल में वार का नाम लिखा रहता है ।

वार

वार ७ होते हैं—रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार । वार की पंक्ति के बगल में तिथि का मान घटी तथा पल में दिया रहता है । उसके बगल में घटी तथा पल को घंटा मिनट में बदलकर लिखा रहता है । उसके बगल में सांकेतिक शब्द "रा", "दि", "सा", "प्रा", दिया रहता है । जिसका अर्थ होता है—रा का रात्रि, दि का दिन, सा का सांय, प्रा का प्रात: उसके बगल की पंक्ति में नक्षत्र लिखा रहता है ।

नक्षत्र

नक्षत्र २७ होते हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

१. अश्विनी	८. पुष्य	१५. स्वाति
२. भरणी	९. आश्लेषा	१६. विशाखा
३. कृतिका	१०. मघा	१७. अनुराधा
४. रोहिणी	११. पूर्वाफाल्गुनी	१८. ज्येष्ठा
५. मृगशिरा	१२. उत्तराफाल्गुनी	१९. मूला
६. आर्द्रा	१३. हस्त	२०. पूर्वाषाढ़ा
७. पुनर्वसु	१४. चित्रा	२१. उत्तराषाढ़ा

२२. श्रवण   २४. शतभिषा   २६. उत्तराभाद्रपद
२३. धनिष्ठा   २५. पूर्वाभाद्रपद   २७. रेवती

इसके बगल की पंक्ति में नक्षत्र का मान घटी तथा पल में दिया रहता है। उसके बगल की पंक्ति में उस नक्षत्र के मान घटी पल का घंटा मिनट में बदला हुआ समय रहता है। उसके बगल की पंक्ति में योग दिया रहता है।

योग

योगों की संख्या भी २७ है—

१. विषकम्भ	१०. गण्ड	१९. परिध
२. प्रीति	११. वृद्धि	२०. शिव
३. आयुष्मान	१२. ध्रुव	२१. सिद्ध
४. सौभाग्य	१३. व्याघात	२२. साध्य
५. शोभन	१४. हर्षण	२३. शुभ
६. अतिगण्ड	१५. वज्र	२४. शुक्ल
७. सुकर्म	१६. सिद्धि	२५. ब्रह्म
८. धृति	१७. व्यतिपात	२६. ऐन्द्र
९. शूल	१८. वरीयान्	२७. वैधृति

योग के बगल की पंक्ति में योग का मान घटी पल में दिया रहता है। उसके बगल की पंक्ति में उस घटी पल को घंटा मिनट में बदल कर लिखा रहता है। उसके बगल की पंक्ति में करण दिया रहता है।

करण

करण ११ होते हैं—

१. बब २. वालब ३. कौलव ४. तैतिल ५. गर ६. वणिज ७. विष्टि ८.शकुनि ९. चतुष्पद् १०. नाग ११. किस्तुघ्न। उसके बगल की पंक्ति में करण का मान घटी पल में दिया रहता है। उसके बगल की पंक्ति में पुनः करण दिया रहता है तथा उसके बगल में तिथि का कुल मान घटी पल में दिया रहता है। उसके बगल की पंक्ति में सामान्य योग लिखा रहता है। तत्पश्चात् उसके बगल की पंक्ति में ४ पंक्ति हैं—

(१) अं०　　(२) फ०

(३) सा०　　(४) सौ०

जिसका पूर्ण अर्थ होता है। (१) अं० से अंग्रेजी तारीख (२) फ० से फारसी तारीख (३) सा० से सायन तारीख (४) सौर तारीख। उसके बगल की पंक्ति में चं० रा० प्र० लिखा रहता है। जिसका अर्थ है चन्द्रमा का राशि प्रवेश अर्थात् चन्द्रमा जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते हैं उसका समय घटी पल में दिया रहता है। उसके बगल की पंक्ति में सूर्योदय का घंटा मिनट समय दिया रहता है। उसके बगल की पंक्ति में सूर्यास्त का घंटा मिनट समय दिया रहता है। उसके बगल की पंक्ति में औ. स्प. सू दिया रहता है जिसका अर्थ होता है सूर्य की राशि का भ्रमण। उसके नीचे क्रमशः राशि, अंश कला, विकला दिया रहता है। उसके बगल की पंक्ति में क्रान्ति (+) या (–) दी रहती है। इसका अर्थ होता है सूर्य की चाल की गति। 'उ' का अर्थ है उत्तरायण का सूर्य, द का अर्थ है दक्षिणायन का सूर्य। उसके बगल की पंक्ति में रेल अं० मि० लिखा रहता है जिसका अर्थ है सूर्योदय के समय का रेलवे समय से कितना अन्तर मिनट में है।

उपर्युक्त बातों में दिनमान, तिथि, नक्षत्र, योग व करण का घटी पल का जो समय दिया रहता है वह सूर्योदय से प्रारभं होकर उनकी समाप्ति का समय है जैसे अधिक ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को अनुराधा नक्षत्र के सामने १/४९ लिखा हुआ है। इसका अर्थ है —उस दिन सूर्योदय के बाद १ घटी ४६ पल

पर अनुराधा नक्षत्र समाप्ति में है और १ घटी ४६ पल के बाद का नक्षत्र ज्येष्ठा शुरू होगा जो द्वितीया को सूर्योदय से ४ घटी १३ पल पर समाप्त होगा।

तिथियों की संज्ञा

तिथियों की संज्ञा सारिणी बना कर दे रहे हैं—

नन्दा तिथि	१, ६, ११
भद्रा तिथि	२, ७, १२
जया तिथि	३, ८, १३
रिक्ता तिथि	४, ९, १४
पूर्णा तिथि	५, १०, १५

क्रूर तिथि

मेष संक्रान्ति को एकम, वृषभ संक्रान्ति को दूज, मिथुन संक्रान्ति को तीज, कर्क संक्रान्ति को चौथ, सिंह संक्रान्ति को छठी, कन्या संक्रान्ति को सप्तमी, तुला संक्रान्ति को अष्टमी, वृश्चिक संक्रान्ति को नवमी, धनु संक्रान्ति को एकादशी, मकर संक्रान्ति को द्वादशी, कुंभ संक्रान्ति को त्रयोदशी, मीन संक्रान्ति को चतुर्दशी क्रूर तिथि मानी जाती है।

मेष संक्रान्ति से कर्क संक्रान्ति तक इन चार संक्रान्तियों को क्रमशः पंचमी की १५-१५ घटी क्रूर तिथि मानी जाती है। इस लिए एकम से चौथ तक प्रत्येक तिथि के साथ पंचमी को भी क्रूर तिथि माना जाता है। सिंह संक्रान्ति से वृश्चिक संक्रान्ति तक दशमी की १५-१५ घटी तथा धनु संक्रान्ति से मीन

संक्रान्ति तक पूर्णिमा या अमावस के १५-१५ घटी क्रूर तिथि मानी जाती है। इस क्रम से छठी से नवमी तक की प्रत्येक तिथि के साथ दशमी और एकादशी से चतुर्दशी तक की प्रत्येक तिथि के साथ पूर्णिमा क्रूर तिथि मानी जाती है। मुहूर्त के समय, रिक्ता तिथि, क्रूर तिथि तथा दग्धा तिथियों को निषेध करना चाहिये।

दग्धा तिथियां

दग्धा तिथियां दो प्रकार की होती हैं—

(१) सूर्य से दग्धा तिथियां

(२) चन्द्रमा से दग्धा तिथियां

१. सूर्य से दग्धा तिथियां—धनु और मीन का सूर्य हो तो दूज, वृषभ और कुंभ का सूर्य हो तो चौथ, मेष और कर्क का सूर्य हो तो षष्ठी, कन्या और मिथुन के सूर्य हो तो अष्टमी, सिंह और वृश्चिक का सूर्य हो तो दशमी, तुला और मकर का सूर्य हो तो द्वादशी। इस प्रकार दूज, चौथ, छट्ट, अष्टमी, दशमी और द्वादशी—ये छह तिथियां सूर्य दग्धा तिथियां कहलाती हैं इनमें कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिये।

२. चन्द्र से दग्धा तिथियां—धनु और कुंभ का चन्द्र हो तो दूज, मेष और मिथुन का चन्द्र हो तो चौथ, सिंह और तुला का चन्द्र हो तो छठी, मीन और मकर का चन्द्र हो तो अष्टमी, कर्क और वृष का चन्द्र हो तो दशमी, वृश्चिक और कन्या का चन्द्र हो तो द्वादशी—ये छह तिथियाँ चन्द्र दग्धा तिथियाँ कहलाती हैं। प्रत्येक शुभ कार्य इनमें छोड़ने योग्य हैं।

जन्म कुण्डली की रचना कैसे करें ?

जन्म कुण्डली रचना के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक है—

१. इष्टकाल
२. भभोग
३. भयात
४. नक्षत्र एवं नक्षत्र चरण
५. जन्म राशि
६. जन्म लग्न
७. राशि के भेद
८. राशि के स्वामी ग्रह
९. ग्रह
१०. ग्रह की मित्रता
११. नक्षत्र स्वामी ग्रह
१२. ग्रहों की दृष्टि

जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली बनाई जाती है, उसे जातक या जातिका कहते हैं।

जन्म कुण्डली रचना के लिए मात्र आपको अंग्रेजी तिथि, जन्म स्थान एवं जन्म समय की ज़ानकारी होनी चाहिये। अंग्रेजी तिथि से मेरा तात्पर्य जन्म अंग्रेजी तारीख से है। इसके बाद जन्म वर्ष तिथि का पंचाग अपने सामने रखें। सबसे पहले आप इष्टकाल निकालें। जन्म समय के घंटा मिनट को घटी पल में बदलते हैं अर्थात् सूर्योदय से जन्म समय तक कितने घंटे व्यतीत हो चुके। उस व्यतीत कुल घंटा मिनट को घटी पल में बदलकर लिखा जाता है। इसे ही इष्टकाल कहा जाता है। जन्मकुण्डली बनाने में सूर्योदय से अगले दिन के सूर्योदय के पूर्व का समय एक दिन-रात (अहोरात्र) माना जाता है।

इष्टकाल

इष्टकाल निकालने की विधि को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है।

(१) यदि जन्म समय सूर्योदय से १२ बजे दिन तक का हो।

(२) यदि जन्म समय १२ बजे दिन के बाद १२ बजे रात्रि तक का हो।

(३) जन्म समय १२ बजे रात्रि के बाद अगले दिन के सूर्योदय के पूर्व तक का हो।

उक्त तीनों प्रकार के जन्म समयों का इष्टकाल निकालने की अलग-अलग विधियाँ हैं जिनकी जानकारी आवश्यक है।

१. प्रथम नियम—जातक का जन्म अगर सूर्योदय से १२ बजे दिन तक में हो तो उसका इष्टकाल निम्न प्रकार से निकाला जाता है—

जन्म समय में सूर्योदय का घंटा मिनट घटा लें जो शेष आयेगा वह सूर्योदय से जन्म समय तक का बीता हुआ घंटा मिनट हुआ उसे घटी पल में बदल लें। सूर्योदय समय को जन्म समय में घटाने के बाद शेष घंटा मिनट को २.५ से गुणा कर लें। जो लब्धि प्राप्त हो वही इष्टकाल घटी पल में होगा। ६० विपल का एक पल होता है तथा ६० पल की एक घटी होती है। जैसे ३० मई १९८०ई को किसी का जन्म १० बजे दिन में हुआ। इसका इष्टाकाल निकालना है। उक्त नियम के अनुसार उस दिन ५ घंटा १६ मिनट पर सूर्योदय है। अतः जन्म समय १० घंटा में सूर्योदय घंटा मिनट ५ बजकर १६ मिनट घटाया।

घंटा मिनट
१०—००
(–) ५—१६
शेष ४—४४

घटाने पर ४ घंटा ४४ मिनट शेष आया। सूर्योदय से जन्म समय तक ४ घण्टा ४४ मिनट व्यतीत हुआ। इसे २.५ (ढाई) से गुणा किया अर्थात् ढाई गुना कर दिया। ४/४४ × २.५ अर्थात्

४—४४
४—४४
२—२२

११—५०

यह लब्धि घटी पल में है जो अभीष्ट दिन का इष्टकाल कहलायेगा।

२. द्वितीय नियम—जातक का जन्म अगर सूर्योदय के बाद १२ बजे दिन से १२ बजे रात्रि तक का हो तो उसका इष्टकाल निम्न प्रकार से निकाला जाता है—

१२ घण्टा में सूर्योदय का घण्टा मिनट घटा लें। घटाने के बाद प्राप्त लब्धि को जन्मकालीन घण्टा मिनट में जोड़ दें इस कुल जोड़ घण्टा मिनट का ढाई गुना करें। ढाई गुना करने पर जो घटी पल आवे उसी को इष्टकाल कहा जायेगा। जैसे—अगर किसी व्यक्ति का जन्म १० बजे रात्रि में दिनांक ३०-५-१९८० ई० को हुआ तो उसका इष्टकाल इस प्रकार निकालेंगे।

१२ घंटा में सूर्योदय का समय ५—१६ घंटा मिनट घटावें।

१२—००
(—) ५—१६

शेष ६—४४

शेष घण्टा मिनट में जन्म समय १० बजे रात्रि को जोड़ दें।

६—४४
(+) १०—००

कुल योग १६—४४

कुल योग १६ घण्टा ४४ मिनट सूर्योदय से जन्म समय तक का बीता हुआ घण्टा मिनट हुआ। इसका घटी पल बनाने के लिए ढाई से गुणा करें।

१६ घंटा ४४ मिनट × २.५

अर्थात् १६—४४
१६—४४
८—२२
४१—५०

४१ घटी ५० पल अभीष्ट समय का इष्टकाल कहा जायेगा।

३. तृतीय नियम—जातक का जन्म अगर १२ बजे रात्रि के बाद अगले दिन के सूर्योदय के पहले हुआ हो तो इष्टकाल निम्न प्रकार से निकाला जाता है—

१२ घंटा में से सूर्योदय का घण्टा मिनट घटा लें शेष घंटा मिनट को १२ घंटा में जोड़ दें। इस जोड़ में जन्मकालीन घंटा मिनट जोड़ दें। यह कुल योग सूर्योदय से जन्म समय तक का बीता हुआ घण्टा मिनट हुआ। इसे ढाई गुना कर लें, यह घटी पल बन जायेगा। इसे ही इष्टकाल कहा जायेगा। जैसे—३०-५-१९८० ई० को ४ बजे रात्रि में किसी का जन्म हुआ। इसका इष्टकाल नियम के अनुसार इस प्रकार निकालेंगे। १२ घंटा में सूर्योदय समय ५—१६ घटाया—

१२—००
(–) ५—१६
शेष ६—४४
इस शेष में १२ घण्टा जोड़ दें +१२—००
योग १८—४४

इसे योग में जन्म कालीन घण्टा मिनट जोड़ दें।

१८—४४
+ ४—००

२२—४४

यह कुल योग २२ घंटा ४४ मिनट सूर्योदय से जन्म समय तक का बीता हुआ समय है। इसे ढाई गुना कर लें।

२२—४४
२२—४४
११—२२
―――――
५६—५०

प्राप्त लब्धि ५६ घटी ५० पल अभीष्ट समय का इष्टकाल कहते है।

भभोग

जातक का जन्म जिस नक्षत्र में होता है, उस नक्षत्र के कुल मान को भभोग कहते हैं। भभोग निकालने का नियम निम्न प्रकार से है।

(१) जन्म दिन को अगर जन्म नक्षत्र का पूर्ण मान हो और जन्म दिन के पूर्व दिन या अगला दिन इसका मान कुछ भी नहीं हो तो उस दिन जन्म नक्षत्र का जो मान होगा वही भभोग कहलायेगा। उदाहरण स्वरूप १५ अप्रैल १९८० को रेवती नक्षत्र का मान ५६ घटी १३ पल है। अत: भभोग ५६/१३ होगा।

(२) जिस दिन के जन्म समय जो नक्षत्र हो, अगर वह नक्षत्र जन्म के पूर्व दिन भी भोग रहा हो तो जन्म दिन के जन्म नक्षत्र में पूर्व दिन भुक्त जन्म नक्षत्र के मान को जोड़ देंगे, वही भभोग होगा। इसे निकालने का सुगम तरीका है कि दिन रात में ६० घटी होती है। अगर पूर्व दिन किसी नक्षत्र का मान ६० घटी से कम हो तो समझना चाहिए कि उस नक्षत्र के बाद वाला नक्षत्र शेष समय में भोग रहा है जो अगले दिन की पंक्ति में अंकित नक्षत्र है। अत: ६० घटी में जन्म दिन के पूर्व दिन का नक्षत्र मान को घटा लें

शेष जो घटी पल बचें उसे जन्म नक्षत्र के घटी पल में जोड़ दें, वही जन्म नक्षत्र का भभोग होगा। उदाहरणस्वरूप ८ अप्रैल १९८० को दिन में तीन बजे किसी का जन्म है। जन्म समय मूल नक्षत्र भोग रहा है जिसका मान उस दिन २४ घटी ५० पल है। जन्म दिन के पूर्व दिन ज्येष्ठा नक्षत्र का मान २४घटी ११ पल पल है। अत: नियम के अनुसार ६० घटी ०० पल में पूर्व दिन के ज्येष्ठा का नक्षत्र मान घटाया।

६०/००
२४/११
शेष ३५/४९

इसमें जन्म दिन के जन्म नक्षत्र का २४घटी ५० पल घटी पल जोड़ दिया।

३५/४९
२४/५०
६०/३९ भभोग हुआ।

(३) जन्म दिन को जन्म समय जो नक्षत्र संचार कर रहा है अगर उसका मान जन्म दिन के अगले दिन भी हो अर्थात् अगर अगले दिन की पंक्ति में भी लिखा गया हो तो उसका भभोग निम्न प्रकार से निकाला जाता है—जन्म दिन का जन्म समय के पूर्व दूसरे नक्षत्र का मान पंचाँग की पंक्ति में दिया रहता है उस नक्षत्र के मान को ६० घटी में से घटा लें। जो शेष बचे वह उस दिन का जन्म नक्षत्र का मान हुआ। इसमें अगले दिन जन्म नक्षत्र के मान को जोड़ दें। वह कुल योग ही भभोग होगा। जैसे ९-१-१९८० ई० को किसी का जन्म ३ बजे दिन में हुआ। पंचांग देखने से पता चला कि उस दिन २/५० बजे दिन में उत्तराषाढ़ा नक्षत्र है जिसका मान २२/४४ है। उत्तराषाढ़ा के बाद वाला नक्षत्र श्रवण हुआ। अत: श्रवण ही जन्म नक्षत्र हुआ। अत: उस दिन श्रवण नक्षत्र

का मान ६०/०० में उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का मान २२/४२ घटाया। शेष ३७/१८ उस दिन श्रवण घटी में से नक्षत्र का कुल मान हुआ। जन्म दिन के पहले दिन की पंक्ति में श्रवण का मान २० घटी १७ पल लिखा हुआ है। इस जन्म नक्षत्र के मान को जन्म दिन नक्षत्र का शेष घटी-पल का मान जोड़ दिया।

३७/१८
\+ २०/१७
कुल योग ५७/३५

यही कुल घटी पल में मान भभोग कहलाता है।

भयात

जातक के जन्म समय तक जन्म नक्षत्र कितना बीत चुका है। उक्त अवधि तक जन्म नक्षत्र के बीते हुए घटी पल को भयात कहा जाता है। इसे जानने के लिए इष्टकाल की सहायता ली जाती है क्योंकि जन्म समय को ही भयात जानने के लिए इष्टकाल के रूप में आधार माना जाता है। इसके भी निम्न तरीके हैं—

(१) अगर जन्म दिन को जन्म नक्षत्र पूर्ण भोग रहा हो तो मात्र इष्टकाल समय को ही भयात जाना जाता है। उदाहरण स्वरूप ५ जून १९८० को किसी का जन्म १२ बजे दिन में हुआ। जन्म समय इष्टकाल १६/५२ हुआ। उस दिन जन्म नक्षत्र शतभिषा का मान ५५ घटी ४२ पल है। शतभिषा जन्म दिन के पूर्व नहीं भोग रहा है और न अगले दिन ही जन्म दिन के भोग रहा है। अत: उस दिन भभोग जन्म नक्षत्र का कुल मान ५५/४२ ही भभोग हुआ तथा इष्टकाल १६/५२ भयात हुआ।

(२) अगर जन्म दिन के पूर्व भी जन्म नक्षत्र का मान भोग रहा हो तो वैसी

परिस्थिति में भयात निम्न प्रकार से निकाला जाता है। जन्म दिन के इष्टकाल में पूर्व दिन व्यतीत जन्म नक्षत्र के मान को जोड़ देते हैं, वही कुल जोड़ भयात हुआ। उदाहरण स्वरूप किसी का जन्म ६ जून १९८० को १० बजे दिन में हुआ। १० बजे दिन का इष्टकाल ११/५५ हुआ। जन्म दिन के पूर्व दिन जन्म नक्षत्र पूर्वाभाद्रपद कितना व्यतीत हुआ है, इसे निकालेंगे। पंचांग देखने से पता चला कि जन्म दिन के पूर्व दिन शतभिषा नक्षत्र ५५ घटी ४२ पल है। इसे ६० घटी में से घटाया।

६०/००
− ५५/४२
शेष ४/१८

यही शेष ४/१८ उस दिन पूर्वाभाद्रपद का व्यतीत समय है। इसे इष्ट काल में जोड़ दिया—

११/५५
४/१८
कुल योग १६/१३ यही भयात हुआ।

(३) अगर किसी का जन्म वैसे दिन हो जिस दिन जन्म नक्षत्र तो बीत ही रहा होगा साथ ही जन्म दिन के बाद अगले दिन भी जन्म नक्षत्र व्यतीत हो रहा हो तो वैसे जन्म समय का भयात निम्न प्रकार से निकाला जाता है अपने इष्टकाल में जन्म दिन को व्यतीत दूसरे नक्षत्र का मान, जो जन्म नक्षत्र से पूर्व का नक्षत्र है, घटा लें। शेष जो आएगा वही भयात कहलाएगा। उदाहरण स्वरूप ६ जून १९८० ई० को किसी का जन्म ३ बजे रात्रि में हुआ। उस समय का भयात निकालना है। पंचांग देखने से पता चला कि रात्रि १ घंटा ५७ मिनट तक पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र

भोग रहा है। उसके बाद उत्तराभाद्रपद नक्षत्र आ रहा है चूंकि जन्म तीन बजे रात्रि में है, अत: जन्म नक्षत्र उत्तराभाद्रपद हुआ। ३ बजे रात्रि का इष्टकाल निकाला तो इष्टकाल आया ५४ घटी २५ पल। जन्म दिन को जन्म नक्षत्र के पूर्व व्यतीत नक्षत्र का मान पूर्वाभाद्रपद का मान ५१/४७ है, अत: इस जन्म नक्षत्र के पूर्व नक्षत्र पूर्वाभाद्रपद के मान ५१/४७ को इष्टकाल में घटाया—

इष्टकाल ५४/२५

घटाव पूर्व भाद्रपद का ५१/४७

मान शेष २/३८ यही भयात हुआ।

नक्षत्र एवं नक्षत्र चरण

कुल २७ नक्षत्र होते हैं जिनके विषय में पहले चर्चा की गई है। एक नक्षत्र में चार अक्षर होते हैं जिसे ही चार चरण कहा जाता है। अत: २७ नक्षत्र में कुल २७ × ४ = १०८ चरण होते हैं। उदाहरण के लिए अश्विनी नक्षत्र में चार चरण निम्न होते हैं—चू, चे, चो, ला। पंचांग में सभी नक्षत्रों का चरण दिया रहता है। इस पुस्तक के चौथे अध्याय में भी दे रहे हैं।

राशि का ज्ञान

जिस नक्षत्र में जन्म होता है, उसी नक्षत्र चरण के अनुसार जन्म राशि निश्चित होती है।

कुल १२ राशि हैं जो निम्न हैं—

१. मेष २. वृष ३. मिथुन ४. कर्क ५. सिंह ६. कन्या ७. तुला ८. वृश्चिक ९. धनु १०. मकर ११. कुम्भ १२. मीन। इन राशियों के बदले क्रमांक से भी राशि की पहचान की जाती है जैसे १ क्रमांक में मेष राशि जाना जाता है। कुल नक्षत्र चरण में कुल १२ राशि का भाग देने पर भागफल ९ आता है। अतः ९ अक्षर की एक राशि होती है। इसका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

नक्षत्र	अक्षर	राशि
१. अश्विनी	चू, चे, चो, ला	
२. भरणी	ली, लू, ले, लो	
३. कृत्तिका	अ	१. मेष
३. कृत्तिका	ई, उ, ए	
४. रोहिणी	ओ, वा, वी, वू	
५. मृगशिरा	वे, वो	२. वृष
५. मृगशिरा	का, की	
६. आर्द्रा	कु, घ, ङ, छ	
७. पुनर्वसु	के, को, हा	३. मिथुन
७. पुनर्वसु	हो	
८. पुष्य	हू, हे, हो, डा	
९. आश्लेषा	डी, डू, डे, डो	४. कर्क

१०. मघा	मा, मी, मू, मे	
११. पूर्वाफाल्गुनी	मो, टा, टी, टू	
१२. उत्तराफाल्गुनी	टे	५. सिंह
१२. उत्तराफाल्गुनी	टो, पा, पी	
१३. हस्त	पू, ष, ण, ठ	
१४. चित्रा	पे, पो	६. कन्या
१४. चित्रा	ना, री	
१५. स्वाति	रू, रे, रो, ता	
१६. विशाखा	ती, तू, ते	७. तुला
१६. विशाखा	तो	
१७. अनुराधा	ना, नी, नू, ने	
१८. ज्येष्ठा	नो, या, यी, यू	८. वृश्चिक
१९. मूला	ये, यो, भा, भी	
२०. पूर्वाषाढ़ा	भू, ध, फ, ढ़	
२१. उत्तराषाढ़ा	भे	९. धनु
२१. उत्तराषाढ़ा	भो, जा, जी	
२२. श्रवण	खी, खू, खे, खो	
२३. धनिष्ठा	गा, गी	१०. मकर
२३. धनिष्ठा	गू, गे	
२४. शतभिषा	गो, सा, सी, सू	
२५. पूर्वाभाद्रपद	से, सो, दा	११. कुम्भ
२५. पूर्वाभाद्रपद	दी	
२६. उत्तराभाद्रपद	दू, थ, झ ञ	
२७. रेवती	दे, दो, चा, ची	१२. मीन

जन्म कुण्डली के द्वादश भावों को अंशों में व्यक्त करना

जन्म कुण्डली को पूरा आकाश समझना चाहिए। पूरे आकाश को ३६०° में बाँटने पर प्रत्येक घर ३०° को प्रकट करता है। प्रत्येक राशि का अपना क्षेत्र आकाश मण्डल में निश्चित कर दिया गया है जो निम्न है—

क्रमांक	राशि	डिग्री या अंश
१.	मेष	०° से ३०°
२.	वृष	३१° से ६०°
३.	मिथुन	६१° से ९०°
४.	कर्क	९१° से १२०°
५.	सिंह	१२१° से १५०°
६.	कन्या	१५१° से १८०°
७.	तुला	१८१° से २१०°
८.	वृश्चिक	२११° से २४०°
९.	धनु	२४१° से २७०°
१०.	मकर	२७१° से ३००°
११.	कुम्भ	३०१° से ३३०°
१२.	मीन	३३१° से ३६०°

इससे लग्न के बलाबल को समझने में सहायता मिलेगी।

राशियों का स्वरूप

राशियों को तीन स्वरूप (भागों) में बाँटा गया है—

१. चर राशि

२. स्थिर राशि

३. द्विस्वभाव राशि

मेष, कर्क, तुला, मकर—चर राशियाँ हैं।

वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ—स्थिर राशियाँ हैं।

मिथुन, कन्या, धनु, मीन—द्विस्वभाव राशियाँ हैं।

राशि और स्वामी

बारह राशियां होती हैं। १२ राशियों को ७ ग्रहों के बीच बाँट दिया गया है। चूंकि राहु-केतु, छाया ग्रह हैं इसलिए इनकी स्वतंत्र राशि नहीं होती। नीचे राशि एवं उसके स्वामी ग्रह का विवरण दिया जा रहा है।

राशि	राशि स्वामी ग्रह
१. मेष	मंगल
२. वृष	शुक्र
३. मिथुन	बुध
४. कर्क	चन्द्रमा
५. सिंह	सूर्य
६. कन्या	बुध
७. तुला	शुक्र
८. वृश्चिक	मंगल
९. धनु	गुरु
१०. मकर	शनि
११. कुम्भ	शनि
१२. मीन	गुरु

उक्त चक्र से यह स्पष्ट हो गया है कि—

मंगल ग्रह दो राशियों का स्वामी हैं—मेष, वृश्चिक।

बुध ग्रह दो राशियों का स्वामी हैं—मिथुन, कन्या।

शुक्र ग्रह दो राशियों का स्वामी हैं—वृष, तुला।

शनि ग्रह दो राशियों का स्वामी हैं—मकर, कुम्भ।

सूर्य सिर्फ एक राशि सिंह का स्वामी है।

चन्द्रमा सिर्फ एक राशि कर्क का स्वामी है।

दिन के स्वामी सूर्य हैं तथा रात के स्वामी चंद्रमा हैं।
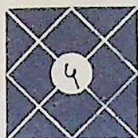
ग्रह का ज्ञान

ग्रह सात हैं— सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। दो छाया ग्रह हैं—राहु और केतु। इस प्रकार कुल ९ ग्रह हुए। जातक का जन्म पृथ्वी पर होता है। आकाश मंडल में सभी ग्रह स्थित हैं। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती रहती है जातक के जन्म के समय आकाशीय पिंड के जिन-२ ग्रहों की रश्मियों का प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है, जातक का स्वभाव, स्वरूप वैसा ही होता है। चंद्रमा पृथ्वी से सर्वाधिक निकट का ग्रह है तथा इसे पृथ्वी का उपग्रह भी कहा जाता है।

१. सूर्य—पृथ्वी की दूरी सूर्य से ९ करोड़ २८ लाख २७ हजार मील है पृथ्वी और सूर्य के बीच में बुध, शुक्र हैं।

शनि
गुरु
मंगल
सूर्य
बुध
शुक्र
चन्द्रमा
पृथ्वी

शनि
गुरु
मंगल
सूर्य
बुध
शुक्र
चन्द्रमा
पृथ्वी
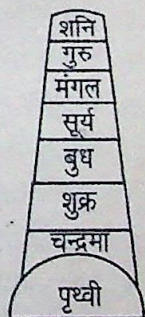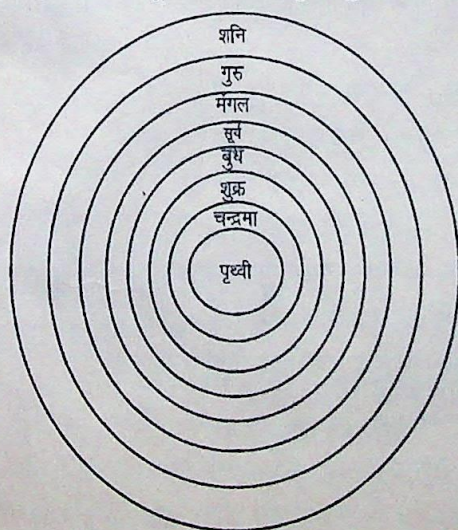
२. **बुध**—सूर्य से बुध की दूरी ३ करोड़ ६० लाख मील है ।

३. **शुक्र**—सूर्य से शुक्र की दूरी ६ करोड़७२ लाख मील है ।

४. **मंगल**—सूर्य से ऊपर मंगल है जो सूर्य से १४ करोड़ १५ लाख ५० हजार मील ऊपर है ।

५. **गुरु**—सूर्य से ऊपर गुरु है जो सूर्य से ४८ करोड़ ३२ लाख ८० हजार मील पर है ।

६. **शनि**—सूर्य से ऊपर शनि है जो सूर्य से ८८ करोड़ ६० लाख मील पर है ।

ग्रहों का स्वरूप तथा मित्रता

ग्रहों की मित्रता

सूर्य को क्रूर ग्रह कहा जाता है । मंगल, शनि, राहु, पाँच ग्रह कहे जाते हैं । चन्द्रमा, बुध, शुक्र गुरु शुभ ग्रह हैं । ग्रहों की परस्पर भिन्नता इस प्रकार है—

१. **सूर्य** के मित्र ग्रह—चन्द्रमा, मंगल, गुरु हैं ।

२. **चन्द्रमा** के मित्र ग्रह — सूर्य तथा बुध हैं ।

३. **मंगल** के मित्र ग्रह — सूर्य, चन्द्रमा तथा गुरु हैं ।

४. **बुध** के मित्र ग्रह — सूर्य एवं शुक्र हैं ।

५. **गुरू** के मित्र ग्रह — सूर्य, चन्द्रमा तथा मंगल हैं ।

६. **शुक्र** के मित्र ग्रह — बुध तथा शनि हैं ।

७. **शनि** के मित्र ग्रह — बुध तथा शुक्र हैं ।

ग्रहों की शत्रुता

१. **सूर्य** का शत्रु ग्रह — शुक्र तथा शनि हैं ।

२. चन्द्रमा का शत्रु ग्रह — कोई नहीं है ।

३. मंगल का शत्रु ग्रह — बुध है ।

४. बुध का शत्रु ग्रह — चंद्रमा ।

५. गुरु का शत्रु ग्रह — बुध तथा शुक्र हैं ।

६. शुक्र का शत्रु ग्रह — सूर्य तथा चन्द्रमा है ।

७. शनि का शत्रु ग्रह — सूर्य , चन्द्रमा तथा मंगल हैं ।

ग्रहों की मूल त्रिकोण राशि

ग्रहों का मूल त्रिकोण राशि बनाकर दे रहे हैं—

क्रमांक	ग्रह	मूल त्रिकोण राशि
१.	सूर्य	सिंह
२.	चन्द्रमा	वृष
३.	मंगल	मेष
४.	बुध	कन्या
५.	गुरू	धनु
६.	शुक्र	तुला
७.	शनि	कुम्भ

ग्रहों की उच्च तथा नीच राशियां

१. शनि की उच्च राशि तुला तथा नीच राशि मेष है ।

२. राहु की उच्च राशि मिथुन तथा नीच राशि धनु है ।

उच्च-नीच राशि चक्रम्

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च राशि	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु
उच्च राशि	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५
नीच राशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन
नीच अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५

३. केतु की उच्च राशि धनु तथा नीच राशि मिथुन है।

ग्रहों की उच्चता और नीचता अपनी राशियों में एक निश्चित अंश तक ही रहता है। ३० अंश की एक राशि होती है। उच्चता व नीचता को राशि अंशों में 'उच्च नीच राशि चक्रम्' से जाना जा सकता है। जैसे— सूर्य मेष राशि में १० अंश तक उच्च का और तुला राशि में १० अंश तक नीच का, चन्द्रमा वृष राशि में ३ अंशों तक उच्च का और वृश्चिक राशि में ३ अंशों तक नीच का रहता है। इस प्रकार सारिणी से सभी ग्रह के विषय में समझना चाहिए। सभी ग्रहों की जानकारी के लिये ग्रहों का 'उच्च नीच राशि चक्रम्' पृष्ठ संख्या ३४ पर दे रहे हैं।

ग्रहों की दृष्टि

प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से बाँये सातवें घर पर पूर्ण दृष्टि से देखता हैं इसके अलावा मंगल अपने स्थान से चौथे एवं आठवें स्थान को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। गुरु भी अपने स्थान से पंचम एवं नवम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता हैं। शनि अपने स्थान से तृतीय एवं दशम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता हैं। राहु एवं केतु भी अपने स्थान से पंचम एवं नवम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता हैं। अपने स्थान से द्वितीय, एकादश, द्वादश तथा छठे स्थान को कोई भी ग्रह नहीं देखता है। शनि को छोड़कर सभी ग्रह अपने स्थान से तृतीय एवं दशम घर को एक चौथाई दृष्टि से देखते हैं। गुरु को छोड़कर सभी ग्रह अपने स्थान से पंचम तथा नवम घर को आधी दृष्टि से देखते हैं। मंगल को छोड़कर सभी ग्रह अपने स्थान से अष्टम स्थान को तीन चौथाई दृष्टि से देखते हैं। राहु एवं केतु की अर्ध दृष्टि दूसरे तथा सातवें स्थान पर होती है।

जन्म लग्न

मेष, वृष आदि १२ राशियों को लग्न कहा जाता है । ६० घटी अर्था २४ घंटा में प्रत्येक दिन रात ये १२ राशियां क्रमशः भ्रमण करती रहती हैं साधारणतया एक राशि या लग्न दो घंटे तक अपना समय रखती हैं ।सू एक माह तक एक राशि में संचार करते हैं । इस प्रकार सूर्य को एक राशि दूसरी राशि में जाने में १ माह लगता है । सूर्य जिस दिन जिस राशि का रह है, उस दिन सूर्योदय समय वही राशि या लग्न भोग करती है । सूर्योदय समय जिस लग्न या राशि में सूर्य रहते हैं उससे सातवीं राशि में सूर्यास होता है ।

जन्म लग्न निकालने का प्रथम तरीका

पंचांग में दैनिक लग्न सारिणी दिया रहता है । प्रत्येक दिन की अलग-लग्न सारिणी बनी है । उपर की पंक्ति में तिथि, वार तथा घंटा मिनट में लिख
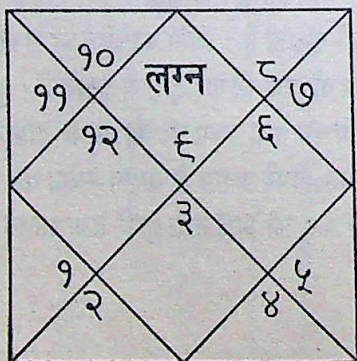
रहता है। बाँये पंक्ति में लग्न का नाम है। लग्न के सामने जो घंटा मिनट दिया रहता है, वह उस लग्न का अन्त समय है। अत: उस लग्न सारिणी को देखकर जन्म समय का लग्न निकालना चाहिए। जैसे २५ जून १९७९ को जन्म समय ७ बजे रात्रि का जन्म लग्न निकालना है।

पंचांग में उक्त तिथि को दैनिक लग्न सारिणी में देखा तो वृश्चिक लग्न ६ बजकर ४ मिनट संध्या में समाप्त हो रहा है। उसके बाद धनु लग्न प्रारम्भ हुआ जो रात्रि ८ बजकर १० मिनट तक भोग रहा है चूंकि जन्म ७ बजे रात्रि में है, अत: लग्न सारिणी के अनुसार उस समय धनु लग्न है। अत: जन्म धनु लग्न में सिद्ध हुआ। जन्मकुंडली चक्र में धनु लग्न के बदले धनु राशि का क्रमांक ९ लिखा जाता है। इसे जन्मकुंडली चक्र में ऊपर के मध्य खाने में लिखा जाता है। वहाँ से बाँये क्रमश: वृद्धि के रूप में राशि प्रत्येक खाने में लिखी जाती है।

जन्म लग्न निकालने का दूसरा तरीका

पंचांग में प्रत्येक तिथि के सामने सूर्य स्पष्ट दिया रहता है। सूर्य स्पष्ट सूर्योदय के समय का स्पष्ट लग्न है।

सूर्य स्पष्ट में से इस एक स्थान पर राशि अंश को अलग लिखे तथा कला विकला को एक साथ अलग लिखें। अब पंचांग निकालें। पंचांग में लग्न सारिणी दी रहती है। उस लग्न सारिणी के खाने में सबसे ऊपर राशि का अंश है तथा बायें प्रथम पंक्ति में राशि है, जो मेष से क्रमश: मीन तक है। उस लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट राशि के सामने तथा राशि अंश के सामने जो अंक लिखा हो उसे अलग लिख लें। अलग लिखे अंक में इष्टकाल अपना जोड़ दें। अगर लब्धि ६० से अधिक हो तो योगफल में ६० घटाकर लब्धि लेंगे। अब इस लब्धि को सारिणी में ढूंढेंगे। जिस राशि के सामने लब्धि

अंक दिखाई दे वही लग्न की राशि अंश, कला, विकला हुआ। अब ए
उदाहरण द्वारा इसे समझ लें। ५ जून १९८० को किसी का जन्म हुआ
जन्म इष्टकाल १५/५२ है। उस दिन पंचांग में देखा तो सूर्य स्प
१/२०°/४५'/४३'' है। इसे दो भाग में करके अलग-२ लिख दें।

१/२०° — ४५'/४३''

सूर्य स्पष्ट राशि अंक को लग्न सारिणी में ढूँढा। १ राशि के २० अं
के सामने ५/२१/५५ लिखा है इसमें इष्टकाल जोड़ दें।

५	२१	५५
१५	५२	००
२०	७३	५५
	(–) ६०	
२१	१३	५५

अब लग्न सारिणी में २१/१३/५५ खोजा। २१/१३/५५ तो नहीं
परन्तु बगल का अंक २१/९/६ है। इसके सामने बाँये कर्क राशि है अ
लग्न स्पष्ट हुआ ३/२०°/१३'/५५'' अर्थात् कर्क लग्न के २० अंश पर जन
है यही लग्न स्पष्ट हुआ।

जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों के अंश

जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों का अंश जानने के लिए तिथि के पंचां
पंक्ति को देखें। सूर्य की राशि अंश कला प्रतिदिन का दिया रहता है। पंचां
में प्रत्येक पृष्ठ पर सूर्योदय दैनिक स्पष्ट, भौमादि ग्रह स्पष्ट लिखा गया है
उसमें ऊपर भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि राहु ग्रह का नाम अंकित है तथा बा
तिथि तथा वार लिखा रहता है। ग्रह के नीचे चार पंक्ति हैं। प्रथम पंक्ति रा
की है, द्वितीय पंक्ति अंश का है, तृतीय पंक्ति कला का है व चतुर्थ पंक्ति विकल

का है । यह तो इन ग्रहों की राशि अंश, कला, विकला आप निकाल लेंगे । ऋषिकेष पंचांग में चन्द्रमा की दैनिक राशि अंश कला विकला नहीं लिखा रहता है परन्तु ऋषिकेश पंचांग एवं विश्व पंचांग में इसका वर्णन है अतः चन्द्र स्पष्ट राशि अंक कला विकला निकालने का तरीका जान लें ।

चन्द्र स्पष्ट और महादशा का भुक्त भोग्य कैसे जानें?

भयात और भभोग को पलात्मक बना लें। पलात्मक बनाने के बाद दोनों को अलग-अलग स्थान पर लिख लें पुन: भयात के पलात्मक में ६० से गुणा कर गुणनफल में पलात्मक भभोग से भाग दें। जो लब्धि आये उसे एक स्थान पर लिख लें। अब जन्म नक्षत्र के पूर्व बीते हुए उतने नक्षत्र की संख्या ६० से गुणा कर भयात में भाग देने के पश्चात प्राप्त प्रथम लब्धि में इस गुणनफल को जोड़ दें। अब फिर से सभी लब्धि को एक स्थान पर रखकर २ से गुणा करें। गुणनफल में ९ से भाग दें। प्रथम लब्धि में ३० से भाग देकर राशि बना लें। यही चन्द्र स्पष्ट हुआ।

उदाहरण—६ जून १९८० को इष्टकाल ५४/२५ का चन्द्र स्पष्ट करना है। जन्म समय उत्तराभाद्रपद नक्षत्र है। उक्त इस घटी का भयात २/३८ तथा भभोग ५५/५२ है और गत नक्षत्र की संख्या २५ है। अब नियम के अनुसार भयात और भभोग का पलात्मक बनाया।

२घटी ३८ पल

× ६०

१२०+३८=१५८

अत: १५८ पलात्मक भयात है।

भभोग ५५ घटी ५२ पल

× ६०

३३००+५२

= ३३५२

अत: ३३५२ पलात्मक भभोग हुआ।

पलात्मक भयात को ६० से गुणा करा। १५८ × ६० = ९४८० । इस गुणनफल में पलात्मक भभोग का भाग दें। पलात्मक भभोग ३३५२ है।

```
३३५२) ९४८० ( २
      ६७०४
      ----
      २७७६
      × ६०
      ----
      ००००
     १६६५६ ×
     ------
३३५२) १६६५६० ( ४९
     १३४०८
     ------
     ३२४८०
     ३०१६८
     ------
      २३१२
      × ६०
     ------
      ००००
     १३८७२ ×
     ------
३३५२) १३८७२० ( ४१
      १३४०८
     ------
       ४६४०
       ३३५२
     ------
       १२८८
```

लब्धि २/४९/४१ आयी। गत नक्षत्र २५ को ६० से गुणा किया। २५×६० = १५०० गुणनफल आया। इस गुणनफल को लब्धि में जोड़ दिया। २ + १५०० = १५०२ योगफल हुआ। अत: १५०२/४९/४१

योगफल है। इसे २ से गुणा किया।

१५०२/४९/४१
× २

३००४/९८/८२ या ३००५/३९/५८

इस गुणनफल में नौ से भाग दिया।

९) ३००५/३९/५८ (३३३
२७

३०
२७

३५
२७

८
× ६०

४८०
× ३९
---
९) ५१९ (५७
४५

६९
६३

६
× ६०

३६०
+ ५८
---
९) ४१८ (४६

३६

५८
५४

४

= भागफल ३३३/५७/४६

अब ३३३ में ३० अंक से भाग देकर राशि अंक बनाया ।

३०) ३३३ (११
३०

३३
३०

३

= भागफल ११/३ हुआ ।अतः ११/३/५७/४६ यही चन्द्र स्पष्ट आया । इस प्रकारआय किसी भी इष्टकाल का चन्द्र स्पष्ट ज्ञात कर सकते हैं ।

६ जून १९८० ई० को इष्टकाल ५४/२५ के ग्रह स्पष्ट निम्न प्रकार हैं—

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	१	११	४	२	४	२	४	३	९
अंश	२१	३	१६	१२	११	३	२९	२९	२९
कला	४३	४७	४९	१६	४६	३२	३६	४६	४६
विकला	२	४६	२	१	३३	७	१५	१०	१०
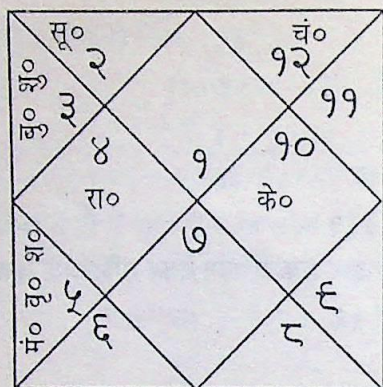
महदशा ग्रह की जानकारी कैसे करें

क्रम	नक्षत्र	क्रम	नक्षत्र	क्रम	नक्षत्र	स्वामी ग्रह
१.	अश्विनी	१०.	मघा	१९.	मूला	केतु
२.	भरणी	११.	पू० फाल्गुनी	२०.	पू० षाढ़ा	शुक्र
३.	कृत्तिका	१२.	उ० फाल्गुनी	२१.	उ० षाढ़ा	सूर्य
४.	रोहिणी	१३.	हस्त	२२.	श्रवण	चन्द्रमा
५.	मृगशिरा	१४.	चित्रा	२३.	धनिष्ठा	मंगल
६.	आर्द्रा	१५.	स्वाति	२४.	शतभिषा	राहु
७.	पुनर्वसु	१६.	विशाखा	२५.	पू० भाद्रपद	गुरु
८.	पुष्य	१७.	अनुराधा	२६.	उ० भाद्रपद	शनि
९.	आश्लेषा	१८	ज्येष्ठा	२७.	रेवती	बुध

जिस नक्षत्र में जन्म होता है, उस नक्षत्र का स्वामी कोई न कोई ग्रह होता

है। उस ग्रह को ही महादशा ग्रह कहा जाता है अर्थात् जन्म समय उस ग्रह की महादशा चल रही है। उसके बाद क्रमश: प्रत्येक ग्रह की दशा स्वामी का समय आता है।

अब नक्षत्रों का स्वामी ग्रह ऊपर दिया गया है। प्रत्येक महादशा ग्रह का भोग वर्ष होता है— इसका वर्णन नीचे दिया जा रहा है—

ग्रह महादशा वर्ष

ग्रह	भोग दशा वर्ष
केतु	७ वर्ष
शुक्र	२० वर्ष
सूर्य	६ वर्ष
चन्द्रमा	१० वर्ष
मंगल	७ वर्ष
राहु	१८ वर्ष
गुरु	१६ वर्ष
शनि	१९ वर्ष
बुध	१७ वर्ष

नोट—यह दशा चक्र वरीयता के आधार पर दिया गया है । इसी प्रकार एक के बाद एक जिसका क्रम है उसी की दशा अवधि होगी ।

अन्तर्दशा

अब आगे महादशा वर्ष में नव ग्रहों की अन्तर्दशा की अवधियों की सारिणीयाँ बनाकर दे रहे हैं ।

केतु महादशा में अन्तर्दशा चक्रम्			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चन्द्र	०	७	०
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७

शुक्र महादशा में अन्तर्दशा चक्रम्			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	३	४	०
सूर्य	१	०	०
चन्द्र	१	८	०
मंगल	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०

सूर्य महादशा में अन्तर्दशा चक्रम्			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
सूर्य	०	३	१८
चन्द्र	०	६	०
मंगल	०	४	६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	९	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०

चन्द्र महादशा में अन्तर्दशा चक्रम्			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
चन्द्र	०	१०	०
मंगल	०	७	०
राहु	१	६	०
गुरु	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध	१	५	०
केतु	०	७	०
शुक्र	१	८	०
सूर्य	०	६	०

मंगल महादशा में अन्तर्दशा चक्रम्			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चन्द्र	०	७	०

राहु महादशा में अन्तर्दशा चक्रम्			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	२४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
सूर्य	०	१०	२४
चन्द्र	१	६	०
मंगल	१	०	१८

गुरु महादशा में अन्तर्दशा चक्रम्			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
सूर्य	०	९	१८
चन्द्र	१	४	०
मंगल	०	११	६
राहु	२	४	२४

शनि महादशा में अन्तर्दशा चक्रम्			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शनि	३	०	३
बुध	२	८	९
केतु	१	१	९
शुक्र	३	२	०
सूर्य	०	११	१२
चन्द्र	१	७	०
मंगल	१	१	९
राहु	२	१०	६
गुरु	२	६	१२

बुध महादशा में अन्तर्दशा चक्रम्			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
बुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	०
सूर्य	०	१०	६
चन्द्र	१	५	०
मंगल	०	११	२७
राहु	२	६	१८
गुरु	२	३	९
शनि	२	८	६

जन्म महादशा भुक्त व भोग्य वर्ष निकालने का तरीका

जातक के भयात और भभोग को इसके लिए लेते हैं। भयात को पलात्मक बना लें। इसे जन्म नक्षत्र के स्वामी ग्रह के वर्ष से गुणा करें। गुणनफल को एक स्थान पर लिख लें। अब इसी प्रकार भभोग को पलात्मक बना लें। अब भयात के पलात्मक में जन्म महादशा ग्रह के वर्ष से गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल में भभोग के पलात्मक से भाग देंगे तो पहला भागफल वर्ष होगा। शेष को फिर १२ से गुणा करें और गुणनफल में फिर पलात्मक भभोग से भाग दें भागफल मास में आयेगा। पुन: शेष में ३० से गुणा करें और गुणनफल में फिर भभोग के पलात्मक से भाग दें भागफल दिन आयेगा। यही जन्म महादशा ग्रह का भुक्त वर्ष, मास व दिन होगा। इसे महादशा ग्रह के वर्ष में से घटायेंगे। शेष महादशा का भोग्य वर्ष मास दिन आयेगा। इसे उदाहरण द्वारा समझाते हैं— दिनाँक ६ जून १९८० को इष्टकाल ५३/२५ पर किसी का जन्म है। जन्म नक्षत्र उत्तराभाद्रपद है। भभोग ५५/५२ एवं भयात २/३८ है। नियम के अनुसार भयात एवं भभोग को पलात्मक किया।

भयात २/३८	भभोग ५५/५२
× ६०	× ६०
१२०	००
+ ३८	३३०×
१५८ पलात्मक भयात	३३०० पलात्मक भयात
	+ ५२
	३३५२

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के स्वामी ग्रह शनि हैं। शनि ग्रह का वर्ष १९ वर्ष है। अत: पलात्मक भयात में ग्रह वर्ष से गुणा किया।

```
        १५८
      × १९
      ----
      १४२२
      १५८
      ----
      ३००२ गुणनफल।
```

अब इस गुणनफल को पलात्मक भभोग से भाग दें।

```
३३५२) ३००२( ० वर्ष
        × १२
       -----
३३५२) ३६०२४( १० मास
        ३३५२
       -----
        २५०४
       ×  ३०
       -----
        ००००
        ७५१२
       ------
३३५२) ७५१२०( २२ दिन
        ६७०४
       -----
        ८०८०
        ६७०४
       -----
        १३७६
```

भागफल ० वर्ष १० मास २२ दिन यह शनि का भुक्त वर्ष है। शनि के वर्ष में से घटायें।

```
        १९— ०— ०
         ०—१०—२२
       -----------
शेष    १८—१—०८
```

योगिनी दशा ज्ञान चक्रम्

नक्षत्र				नक्षत्र का स्वामी योगिनी
१. अश्विनी	९. आश्लेषा	१७. अनुराधा	२५. पू० भाद्रपद	१. भ्रामरी
२. भरणी	१०. मघा	१८. ज्येष्ठा	२६. उ० भाद्रपद	२. भद्रिका
३. कृत्तिका	११. पू०फाल्गुनी	१९. मूला	२७. रेवती	३. उल्का
४. रोहिणी	१२. उ०फाल्गुनी	२०. पू० षाढ़ा		४. सिद्धा
५. मृगशिरा	१३. हस्त	२१. उ० षाढ़ा		५. संकटा
६. आर्द्रा	१४. चित्रा	२२. श्रवण		६. मंगला
७. पुनर्वसु	१५. स्वाति	२३. धनिष्ठा		७. पिंगला
८. पुष्य	१६. विशाखा	२४. शतभिषा		८. धान्या

अत: शनि महादशा का भोग्य वर्ष १८ वर्ष १ मास ८ दिन हुआ।

नवग्रहों के दशावर्ष की कुल अवधि १२० वर्ष है। ३० दिन का ए मास होता है तथा ३६० दिन का एक वर्ष होता है। सिर्फ महादशा वर्ष गणना में इसी नियम का प्रयोग कर दशा अवधि निकालना चाहिए।

योगिनी महादशा कैसे ज्ञात करें ?

जन्म नक्षत्र का योगिनी स्वामी जो है, उसी की जन्म समय योगि महादशा चलेगी, ऐसा जानना चाहिए। कुण्डली फलादेश में इसका भी ब महत्व है। प्रत्येक नक्षत्र के स्वामी योगिनी है। चक्र में इसका विवरण दि जा रहा है।

योगिनी का दशा वर्ष निम्न है—

नाम	दशा वर्ष	नाम	दशा वर्ष
१. मंगला	१ वर्ष	५. भद्रिका	५ वर्ष
२. पिंगला	२ वर्ष	६. उल्का	६ वर्ष
३. धान्या	३ वर्ष	७. सिद्धा	७ वर्ष
४. भ्रामरी	४ वर्ष	८. संकटा	७ वर्ष

इसका भी भुक्त एवं भोग्य वर्ष महादशा ग्रह की भांति निकाला जा है। योगिनी का नाम वरीयता क्रम में है। क्रम के अनुसार ही दशा लि जाती है। योगिनी महादशा कौन सी चल रही है इसके लिए योगि 'दशा ज्ञान चक्रम्' पृ० ५३ पर देखना चाहिये।

❀❀❀
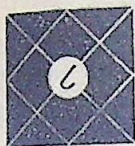
जन्म कुण्डली का परिचय

पिछले पृष्ठों में जन्मकुण्डली रचना से सम्बन्धित सभी आवश्यक जानकारी हो जाने के बाद जन्मकुण्डली रचना करने में कोई दिक्कत नहीं होगी। एक सर्व साधारण व्यक्ति भी जन्मकुण्डली बना सकता है। अब जन्म कुण्डली के विषय में आवश्यक बातें जान लें।

जन्मकुण्डली में कुल १२ खाने होते हैं। इन खानों को "भाव" के नाम से भी जाना जाता है। जैसे प्रथम भाव, द्वितीय भाव आदि ।इन बारह स्थानों के नाम निम्न हैं--

१. तनु भाव	२. धन भाव
३. सहज भाव	४. सुख भाव
५. सुत भाव	६. रिपु भाव
७. जाया भाव	८. मृत्यु भाव
९. भाग्य भाव	१०. राज्य भाव
११. आय भाव	१२. व्यय भाव

- चित्र में उल्लिखित क्रमांक १ स्थान को लग्न का स्थान कहा जाता है।
- क्रमांक १, ४, ७, १०, स्थान को केन्द्र स्थान कहा जाता है।
- क्रमांक ५, ९, स्थान को त्रिकोण स्थान कहा जाता है।
- क्रमांक २, ५, ८, ११ स्थान को पणफर कहते हैं।
- ३,६,९, तथा १२ स्थान की आपोक्लिम भाव कहते हैं।
- ३, ६, १०, ११ भाव को उपचय भाव कहते हैं।
- २, ८, को मारक स्थान कहा जाता है।
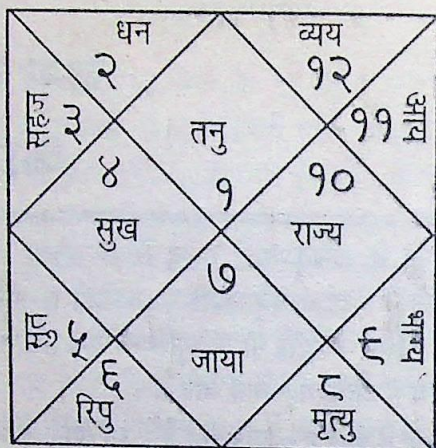
बल साधन

लग्न से सप्तम स्थान तक जातक की दायीं ओर और उसकी स्त्री की बायीं ओर के अंग का बोधक होता है। अष्टम स्थान से द्वादश स्थान तक जातक की बायीं ओर तथा उसकी स्त्री की दायीं ओर अंग का बोधक होता है।

प्रथम भाव जातक का है तो उसके सामने वाले सप्तम भाव उसकी स्त्री का है। चतुर्थ भाव जातक की माँ का है तो ठीक उसके सामने दशम भाव उसके पिता का है। लग्न को पूर्व दिशा कहा जाता है तथा सप्तम स्थान को पश्चिम दिशा कहा जाता है। दशम स्थान को दक्षिण दिशा तथा चतुर्थ स्थान को उत्तर दिशा कहा जाता है।

भाव से क्या जानें ?

कुण्डली के १२ भावों से क्या जानते हैं अब यह बताते हैं—

१. **प्रथम भाव**—जातक का शरीर, आकृति, त्वचा, जाति तथा निज अपमान, यश, गौरव, अभिमान, पशुपालन, सुख-दुख, स्वभाव, दूसरों का धन हर लेना, नम्रता, आयु, शान्ति ।

२. **द्वितीय भाव**—धन, सच और झूठ, घर कुटुम्ब सम्बन्धी बातें, क्रय विक्रय, दानशीलता, वित्त सम्बन्धी उद्यम, सहायता, आँख, हीरा, ताँबा, मणियाँ, मोती, हठ, दूसरों का पालन-पोषण करना देखा जाता है ।द्वितीय भाव से धन सम्बन्धी बातों की जानकारी की जाती है । इससे कुटुम्ब के विषय में भी जाना जाता है । इस भाव से धनी होना, मन की स्थिरता, मृदु वचन, स्पष्टवादिता, सच और झूठ, जिह्वा, आँख, दानशीलता, धन सम्बन्धी उद्यम आदि की जानकारी की जाती है ।

३. **तृतीय भाव**—तृतीय भाव से छोटे भाई के सम्बन्ध में, भाइयों की कुल संख्या, भाइयों की सहायता, धर्म, कार्य, सिपाही, शूरता, मित्र, यात्रा, कष्ट, धन का विभाजन, विद्या रुचि, अच्छे कुल में जन्म, नौकर, दासी, अच्छे यान, छोटी यात्रा, निज धर्म की जानकारी की जाती है ।

४. **चतुर्थ भाव**—इस भाव से माता, जमीन, वाहन, उच्च डिग्री, निज धर्म की जानकारी की जाती है ।

५. **पंचम भाव**—इससे भाव सन्तान, विद्या, राजा, मन्त्री, धार्मिक कथा, पिता का धन, दरबारी स्त्रियों से संग, समाचार लिखना, पेट, मंत्र, जप, धन कमाने का ढंग, आदि की जानकारी प्राप्त की जाती है ।

६. **छठा भाव**—इस भाव से रोग, शत्रु, मामा, शरीर के किसी अंग में सूजन, व्रण चिह्न, ऋण, बदनामी, शत्रुता, मानसिक व्यथा, मूत्र का रोग, चोरी, विपत्ति, भाइयों आदि में झगड़ा के विषय में जानकारी प्राप्त की जाती है ।

७. **सप्तम भाव**—इस भाव से मुख्यत: अपनी स्त्री के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है । इसके अलावा विवाह, काम, पान चबाना, पति, वीर्य, दूसरी स्त्री का होना या न होना, व्यापार, साझेदारी कार्य, मैथुन क्रिया, अन्य

देश, पौष्टिक पदार्थों का खाना पीना आदि का विचार इससे किया जाता है

८. अष्टम भाव—इस भाव से आयु के विषय में विचार किया जाता है। इसके अलावा सुख, पराजय, स्त्री का धन, राज्य से दण्ड, अंगहीन होना सिर का कट जाना, ऋण देना, अज्ञान से प्राप्त दूसरों का धन, भाई से शत्रुता मूत्र रोग आदि का विचार किया जाता है।

९. नवम भाव—इस भाव से भाग्य, धर्म, तीर्थ यात्रा, विद्या के लिए श्रम नम्रता, राज्याभिषेक, पिता का धन, पुत्र राज्याभिषेक का स्थान, धर्म दान पवित्रता, वैभव, सवारी आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

१०. दशम भाव—इस भाव से सरकारी नौकरी, राज्य से प्राप्त लाभ यश, चिकित्सक, यन्त्र, मन्त्र, माता, कमर, देवता मन्त्र सिद्धि, राज्य से प्राप्त प्रतिष्ठा, घोड़े की सवारी, पढ़ाना, शुभ जीवन, दूसरों को काबू में करना आदि बातों की जानकारी की जाती है।

११. एकादश भाव—इस भाव से धन लाभ, व्यापार, ज्येष्ठ भाई, पिता के भाई, विशिष्ट पदवी, भूषण, विद्या, प्रेमिका के लिए आभूषण बनाना, मंत्री पद, साला, माता की आयु, कान जंघा, अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति आदि के विषय में जानकारी की जाती है।

१२. द्वादश भाव—नींद का नहीं आना, व्यय, दोनों पाँव, ऋण से छुटकारा पिता की सम्पत्ति, स्वर्ग जाना, पिछला जन्म, बायी आँख, त्याग, झगड़ा, क्रोध शारीरिक क्षति, अन्य देशों को जाना, भार्या की मृत्यु आदि की जानकारी की जाती है।

जन्म कुण्डली रचना की साधारण सुगम विधि

१. जन्म कुण्डली धारी के पिता का नाम तथा पूरा पता

२. जन्म कुण्डली धारी का लिंग—स्त्री/पुरुष

३. जन्म तिथि अंग्रेजी
४. जन्म समय
५. जन्म वार
६. जन्म संवत्
७. जन्म शाका
८. जन्म मास
९. जन्म पक्ष
१०. जन्म तिथि
११. दिनमान
१२. रात्रिमान
१३. जन्म नक्षत्र
१४. जन्म नक्षत्र चरण
१५. जन्म करण
१६. इष्ट काल
१७. भभोग
१८. भयात
१९. जन्म राशि नाम
२०. जन्म लग्न
२१. जन्म राशि
२२. जन्म ऋतु
२३. जन्म अयन
२४. अयनांश
२५. रवि क्रान्ति
२६. औ. स्प. सूर्य
२७. सूर्य क्रान्ति
२८. रेलवे अन्तर
२९. सूर्योदय
३०. सूर्यास्त
३१. जन्म महादशा
भुक्त वर्ष
भोग्य वर्ष
३२. योगिनी महादशा
भुक्त वर्ष
भोग्य वर्ष
३३. राशीश
३४. वर्ण
३५. वश्य
३६. योनि
३७. योनि वैर
३८. गण
३९. नाड़ी
४०. सूर्य नक्षत्र
४१. चन्द्र नक्षत्र
४२. भौम नक्षत्र
४३. बुध नक्षत्र
४४. गुरु नक्षत्र
४५. शुक्र नक्षत्र
४६. शनि नक्षत्र

४७. राहु नक्षत्र

४८. केतु नक्षत्र

४९. वक्री ग्रह

५०. उच्च ग्रह

ग्रहों के अंश

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि									
अंश									
कला									
विकला									

अथ महादशा ग्रह चक्रम् (अंग्रेजी तिथि में)

ग्रह									
वर्ष									
मास									
दिन									

अथ योगिनी महादशा ग्रह चक्रम् (अंग्रेजी तिथि में)

योगिनी								
वर्ष मास दिन								

इसके बाद ग्रहों का अन्तर्दशा चक्र बनावें ।

मानसगरी या जातकाभरण; बृहद् ज्योतिष सार या मुहूर्त चिन्तामणि या अन्य ज्योतिष पुस्तकों द्वारा दिया गया—मास, फल, संवत फल, पक्ष फल, तिथि फल, वार फल, नक्षत्र फल, करण फल आदि को भी लिखा जाता है। लग्न का फल, राशि का फल अवश्य लिखें। इसके बाद ग्रहों के आधार पर जातक का स्वरूप, स्वभाव, आयु अरिष्टादि वर्ष एवं अन्य योगों का फल लिखें। इस प्रकार आपकी जन्म कुंडली तैयार हो गई।

अथ जन्म कुण्डली
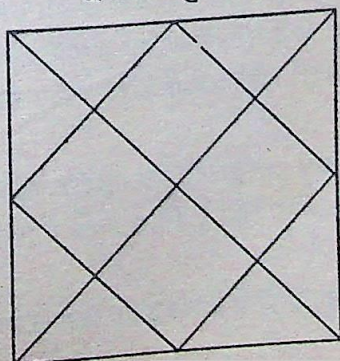
अथ चन्द्र कुण्डली
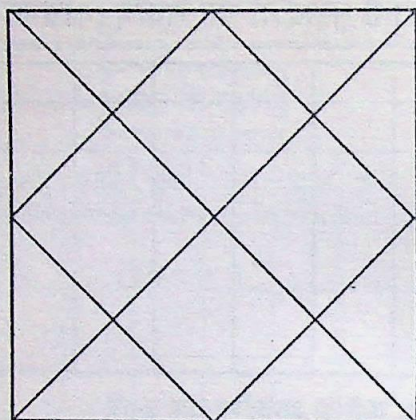
इस अध्याय में जन्म कुण्डली निर्माण सम्बन्धी उपयोगी जानकारी दे दी गई है। आप इसको भली-भाँति समझकर इस ज्ञान को व्यवहार में लाकर मित्रों व परिजनों की जन्म कुण्डलियां बनाकर उनका फल कहें।

फलादेश के सुगम नियम

फलादेश के सुगम नियम

१. वक्री ग्रह का बल उच्च होने के समान होता है।

२. वक्री ग्रह के साथ अगर कोई ग्रह हो, तो उसे भी आधा (१/२) रूप बल प्राप्त हो जाता है।

३. यदि कोई ग्रह वक्री हो, पर उच्च हो तो उसका फल नीच समझना चाहिए।

४. यदि कोई ग्रह वक्री हो साथ ही नीच भी हो तो, अपनी उच्चता का फल देता है।

५. उच्च ग्रह के साथ वाले ग्रह को आधा (१/२) रूप बल प्राप्त होता है।

६. नीच ग्रह के साथ वाले ग्रहों को शून्य बल प्राप्त होता है।

७. सूर्य के साथ बुध को छोड़कर सभी ग्रह अस्त समझे जाते हैं।

८. बुध, राहु, केतु जिस ग्रह के साथ रहेंगे, उसी का फल देंगे।

९. जो ग्रह अपनी उच्च राशि के पूर्व वाली राशि में हो, उसे आरोही कहते हैं। जो ग्रह अपनी उच्च राशि के बाद अगली राशि में हो, उसे अवरोही कहते हैं।

१०. बुध तथा गुरु लग्न में बलवान होते हैं, चन्द्र तथा शुक्र चतुर्थ में बलवान होते हैं, शनि सप्तम में बलवान होते हैं और मंगल तथा सूर्य दशम में बलवान होते हैं।

११. मेष लग्न का जन्म हो तथा गुरु एकादश में हो तो गुरु की दशा में बुरा

फल प्राप्त होता है।

१२. कन्या लग्न हो और मंगल दशम में हो, तो अष्टम और तृतीयेश आयु स्थानों के लिए हानिकारक सिद्ध होंगे।

१३. धनु लग्न हो शनि पंचम में हो तो शनि अपनी दशा में द्वितीय एवं तृतीय भाव के लिए शुभ एवं योगप्रद सिद्ध होगा।

१४. मेष लग्न में जन्म हो तथा अष्टम मंगल हो, तो यह लग्न के लिए बुरा फल देगा।

१५. शुक्र, गुरु तथा बुध यदि केन्द्र या त्रिकोण में हो, तो पूर्णायु, द्वितीय, तृतीय एकादश में हो तो मध्यायु एवं षष्ठ अष्टम तथा द्वादश में हो तो अल्पायु करते हैं।

१६. शनि द्वितीय में आयुष्कारक होते हैं।

१७. यदि लग्न या चन्द्र लग्न अष्टमेष से दृष्ट हो।

अथवा

लग्न से या चन्द्र लग्न से अष्टमेष को शनि या मंगल देखता हो तथा लग्नेश, चन्द्राधिष्ठित राशि का स्वामी या लग्नेशाधिष्ठित राशि के स्वामी यदि शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट न हों, तो वह बहुत अल्पायु को प्राप्त करता है।

१८. बुध यदि अष्टमेश होकर तीन या तीन से अधिक पाप प्रभाव में हो तो आयु को शीघ्र समाप्त करता है।

१९. लग्न से नवमेश एवं दशमेश की परस्पर प्रीति, दृष्टि या आपस में गृह परिवर्तन और बलवान होकर एक दूसरे से केन्द्र में हों या लग्नेशाधिष्ठित राशि के स्वामी से युक्त हों, तो उत्तम दर्जे का धनी तथा राज्याधिकारी होता है।

२०. लग्न से नवम एवं दशम के स्वामी आपस में युति, दृष्टि या आपस में

स्थान परिवर्तन द्वारा सम्बन्धित हों और निज मित्र या उच्च की राशि में स्थित हों तो पदोन्नति होती है तथा सवारी प्राप्त होती है ।

२१. पंचम, तृतीय, चतुर्थ तथा सप्तम भाव के स्वामी आपस में युति दृष्टि अथवा वायव्य द्वारा सम्बन्धित हों और निज मित्र या उच्च राशि में हों तो हाथी घोड़े आदि का सुख मिलता है तथा सन्तान को देने वाले होते हैं ।

२२. कुम्भ लग्न में जन्म हो, मंगल दशम में हो और अष्टम में शनि हो, तो छोटा भाई जन्म लेता है पर अल्पायु होता है ।

२३. गुरु यदि तृतीयेश तथा द्वादशेश हो या अष्टमेश हो या अष्टम भाव में हो तो योगकारक होता है ।

२४. शुक्र षष्टम में शुभ फल करता है ।

२५. सप्तम, चतुर्थ, नवम, एकादश तथा दशम में स्थित राहु धन देता है ।

२६. केतु तृतीय में योग कारक होता है ।

२७. शुक्र द्वादश में भी योगकारी होता है ।

२८. गुरू अष्टम भाव में भोग, धन तथा सुख में वृद्धि करता है ।

२९. शुक्र सप्तम में हो तथा चन्द्रमा द्वादश में हो, तो स्त्री अल्पायु होगी ।

३०. चन्द्रमा दशम में पुत्र नाश करता है परन्तु राज्य संबंधी सभी सुखों को देता है ।

३१. शुक्र द्वादश भाव में, बुध अष्टम भाव में तथा गुरू छठे भाव में सुख प्रदान करते हैं

३२. सूर्य नवम भाव में शुभ करेगा ।

३३. नवमेश की सूर्य से युति दृष्टि द्वारा सम्बन्ध हो, तो राज्य में अथवा राज्य द्वारा मान, धन पाने का योग बनता है ।

३४. **(i) छादक ग्रह**—किसी भाव से द्वितीय स्थान में पड़ा ग्रह प्रथम भाव

की रक्षा करने वाला होता है ।

(ii) **बेधक ग्रह**—किसी भाव से तृतीय स्थान में पड़ा ग्रह उस प्रथम भाव के लिए शारीरिक कष्ट देने वाला होता है ।

(iii) **बन्धक ग्रह**—किसी भाव से चतुर्थ स्थान में स्थित ग्रह बन्धक ग्रह कहा जाता है ।

(iv) **प्रतिबन्धक ग्रह**—किसी भाव से अष्टम स्थित ग्रह उस भाव के लि अधिक रुकावट वाला होता है ।

३५. —अष्टम यदि १२ या ६ में हो ।
—षष्ठेश यदि ८ या १२ में हो ।
—व्ययेश यदि ६ या ८ में हो ।
और इन नेष्ट भावों के स्वामियों का प्रति दृष्टि या स्थान परिवर्तन द्वा परस्पर सम्बन्ध हो परन्तु किसी ग्रह से युति अथवा दृष्टि द्वारा सम्बन्ध न हो तो जातक वैभवशाली राज राजेश्वर होता है ।

३६. नवमेश तथा दशमेश की युति राजयोग कारक है ।

३७. द्वितीय भाव में पापग्रहों की स्थिति से भार्याओं की बार-बार मृत्यु होत है ।

३८. दशम भाव तथा दशमाधिपति यदि शनि से युत या दृष्ट हो तो दत्तक पु की प्राप्ति होती है ।

३९. कुण्डली में ग्रहों की राशि छोड़कर जिस ग्रह का अंशादि अधिक हो उसे अधिक ग्रह कहते हैं ।
यदि **अधिक ग्रह के साथ सूर्य हो** तो राजा को सलाह देने वाला मन्त्री होता है । यदि **अधिक ग्रह पूर्ण चन्द्रमा तथा शुक्र के साथ हो** तो बहु धनी, विद्वान, महान भोगी होता है । यदि **अधिक ग्रह के साथ मंगल हो** तो शस्त्र धारण करने वाला (सिपाही) धातु का कार्य करने वाला श परन्तु कभी राजा भी होता है । यदि **अधिक ग्रह के साथ बुध हो**

शिल्प, घट, पट, व्यापार में चतुर होता है। यदि गुरू उसके साथ हो तो वेद को जानने वाला उत्तम ब्राह्मण और कर्मकाण्डी होता है। यदि उसके साथ शुक्र हो तो दीर्घजीवी तथा कामासक्त होता है। यदि शनि हो तो अनेक प्रकार का कार्य करने वाला यदि राहु या केतु हो तो विष से चिकित्सा करने वाला और लोहे आदि के कार्य में चतुर होता है।

४०. अधिक ग्रह से द्वितीय भाव यदि सूर्य तथा शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो मनुष्य राज्य कर्मचारी होता है।

४१. यदि अधिक ग्रह से तृतीय भाव में पापग्रह हों तो शूरवीर और उपग्रह हों तो डरपोक होता है।

४२. यदि अधिक ग्रह से चतुर्थ भाव चन्द्र शुक्र से दृष्ट हो तो बड़ा नाविक होता है। अधिक मकानों तथा अन्य सुविधाओं के सुख से सुखी होता है। परन्तु श्वेत तथा कृष्ण कुष्ठ से पीड़ित होता है।

४३. यदि लग्न, सूर्य लग्न या चन्द्र लग्न में बुध पड़ा हो तथा इन पर राहु का प्रभाव हो तो त्वचा के रोगों फलबहर आदि की उत्पत्ति होती है।

४४. द्वितीयाधिपति से शनि का युति या दृष्टि द्वारा सम्बन्ध हो तो मनुष्य घटिया दर्जे की विद्या प्राप्त करता है।

४५. शनि, चन्द्र और सूर्य केन्द्र में हों तो शराब पीने वाला तथा जड़ होता है। द्वितीय भाव पर भी इन ग्रहों का प्रभाव हो तो यही फल होता है।

४६. जब वाहन कारक शुक्र का चतुर्थ भाव से शुभ सम्बन्ध हो तो मोटर कार आदि उच्च वाहन की प्राप्ति होती है।

४७. मंगल दूसरे भाव में, शनि तीसरे भाव में तथा गुरु नवम या पंचम में हों तो यह स्पष्ट है कि पुत्र नहीं होगा।

४८. यदि कुम्भ लग्न हो तो सूर्य पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह अपने से बहुत ऊँचे घर में होता है।

४९. यदि सप्तम में वृष राशि हो तथा शुक्र, कर्क, कन्या आदि सम राशियों

में हों तथा चन्द्र भी सम राशियों में हो तो स्त्री सुन्दर मिलती है।

५०. सप्तम भाव तथा सप्तमेश एवं शुक्र पर चतुर्थ, चतुर्थेश तथा चन्द्रमा का प्रभाव हो तो स्त्री मातृ पक्ष से मिलती है।

५१. लग्नेश अष्टम में तथा अष्टमेश लग्न में हो तो वह अनुसन्धान कार्य करता है।

५२. रवि तथा शनि दोनों दशम में हों तो मनुष्य अपमानित होता है।

५३. धन स्थान या धनेश के साथ लाभेश या गुरु का सम्बन्ध योग या दृष्टि द्वारा हो जावे तो वह बहुत धन का मालिक होता है।

५४. यदि एकादश भाव में गुरु शत्रु क्षेत्री होकर बैठा हो और उस पर युति या दृष्टि द्वारा पापग्रहों से पीड़ित हो तथा ६,८ या १२ भाव में हों तो ज्येष्ठ भ्राता का अभाव कहना चाहिए।

५५. सूर्य जब द्वादश भाव में हो, तो मनुष्य अपने सुखों का त्याग दूसरों के लिये करता है। दूसरों का अतिथ्य खूब करके स्वयं हानि उठाता है। आँख की रोशनी कम होती है।

५६. चन्द्रमा द्वादश में मनुष्य को भावुक बना देता है। बिना कारण भय आशंका, अश्रद्धा आदि भावनाएँ उसके मन में आती हैं।

५७. मंगल द्वादश में हो तो जातक अपनी शक्ति का अनावश्यक एवं दुष्प्रयोग करता है। अपने शरीर के पट्ठों को आवश्यकता से अधिक काम में लगाते हैं।

५८. बुध द्वादश में हो तो जातक आवश्यकता से अधिक बात करता है।

५९. गुरु द्वादश में हो तो जातक ऐसे मनुष्य को ज्ञान की बातें बताता है जिनका अर्थ उनके लिए नहीं होता।

६०. शुक्र द्वादश में हो और शनि राहु से पीड़ित हो तो वे अपने वीर्य का अपव्यय करते हैं। पढ़ते बहुत हैं। स्त्री से मन मुटाव रहता है।

६१. शनि द्वादश में हो तो वह अपने स्थान का अधिक प्रयोग करता है । यदि शनि राहु से प्रभावित हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव का होता है ।

६२. जब चतुर्थ भाव, उसके स्वामी और चन्द्रमा इन तीनों पर शनि तथा राहु की युति या दृष्टि का प्रभाव हो तथा शत्रु ग्रह से रहित हो तो, जातक को टी.बी. का रोग होगा ।

६३. चन्द्रमा क्षीण होकर अष्टम भाव में हो और चतुर्थ भाव तथा चन्द्र पर राहु का प्रभाव हो अन्य शुभ प्रभाव न हो तो जातक मिरगी के रोग का शिकार होता है ।

६४. यदि पंचम भाव से बुध का दृष्टि या युति का सम्बन्ध हो तो व्यक्ति में तर्क शक्ति अधिक होती है ।

६५. स्त्री के पति के विषय में गुरु को देखा जाता है तथा गुरु पितामह, पति तथा पुत्र का कारक है । आचार्य, अध्यापक, शिक्षक भी गुरु बनता है । गुरु 'कानून' का भी ग्रह है । अतः गुरु तथा शुक्र का सम्बन्ध लग्न लग्नेश तथा द्वितीय एवं द्वितीयेश से जब होता है तो व्यक्ति कानूनदा वकील, न्यायाधीश होता है ।

६६. गुरु एवं शुक्र 'ब्राह्मण' ग्रह कहलाते हैं ।

६७. राहु द्वितीय, पंचम, नवम, एकादश लग्न आदि धन द्योतक भावों में स्थित हो और उन भावों के स्वामी केन्द्र आदि में स्थित होकर दृष्टि आदि से बलवान हों, तो वह धन को अचानक, सहसा बिना आशा के दे देते हैं । लाटरी आदि का योग ऐसी ही स्थिति के कारण होता है ।

विंशोत्तरी महादशा फल

१. (i) **सूर्य शुभ हो तो** उसकी दशा में पुत्र, धारणात्मक और विवेचनात्मक बुद्धि, अधिकार, आत्मज्ञान, धन, यश, पुरुषार्थ, सुख, ईश्वर की कृपा की

प्राप्ति होती है ।

(ii) **अगर सूर्य अशुभ हो तो** अतीव कष्ट, दुर्बलता, पुरुषार्थहीनता धन का नाश, शत्रु से पीड़ा, राजा का क्रोध, पिता को रोग आदि अशुभ फल की प्राप्ति होती है ।

२. (ii) **चन्द्रमा शुभ हो तो** अपनी दशा में माता को सुख, तालाब आदि खेत, बगीचा, भवन, ब्राह्मणों का आशीर्वाद, धन, अच्छी सवारी की प्राप्ति होती है ।

(ii) अगर **चन्द्रमा अशुभ हो तो** मनुष्य दरिद्र, दुःखी, माता को कष्ट क्रोधी, शीत ज्वर आदि से पीड़ित होता है ।

३. (i) **मंगल शुभ हो तो** अपनी दशा में भूमि की प्राप्ति, इष्ट वस्तु की प्राप्ति प्रखर बुद्धि, पवित्र मन, पराक्रम, धन की प्राप्ति, शत्रुनाश तथा छोटे भाईयों की प्राप्ति होती है ।

(ii) **मंगल यदि अशुभ हो तो** छोटे भाईयों को कष्ट, झगड़ा, भूमि तथा अग्नि से हानि भय, घाव, आँखों की कमजोरी, राजा से कष्ट सज्जनों की ओर से क्रोध, तलवार से घाव तथा व्याधि आदि होते हैं।

४. (i) **बुध यदि शुभ हो तो** अपनी दशा में कपड़ा, धन की प्राप्ति पदवी, इष्ट वस्तु की प्राप्ति, बन्धु सुख प्राप्त होता है ।

(ii) **बुध यदि अशुभ हो तो** विदेश यात्रा, क्रोध बन्धु नाश, बुद्धि की कमी, व्यापारी वर्ग से झगड़ा, भूमि धन आदि का नाम होता है ।

५. (i) **गुरु यदि शुभ हो तो** अपनी दशा में गाँवों का मुखिया पुत्र प्राप्ति **धन,** विवाह, नौकर, वाहन सुख आदि प्राप्त होते हैं ।

(ii) **गुरु अगर अशुभ हो तो** राज्य से कष्ट, भय क्लेश रोग, धन की कमी, ब्राह्मण वर्ग से कष्ट, पिता की ओर से क्रोध, खाने से कष्ट तथा क्षय रोग आदि होते हैं ।

६. (i) **शुक्र यदि शुभ हो तो** अपनी दशा में सुख, तथा उच्च पदवी, वाहन

सुख, धनादि लाभ, स्वर्ण प्राप्ति तथा मंगल कार्य होते हैं।

(ii) **शुक्र यदि अशुभ हो तो** स्त्री कष्ट, धन हानि, चोरी, वीर्य सम्बन्धी रोग होते हैं।

७. (i) **शनि यदि शुभ हो तो** अपनी दशा में वैभव, प्रखर बुद्धि यज्ञादि कार्य, खेत, गाँव, शहर का मुखिया, व्यापार की चतुरता बनाता है।

(ii) **शनि यदि अशुभ हो तो** विषपान, धन-हानि शरीर कष्ट, रोग, राज्य से क्रोध, अंगहीन होना आदि बाधायें होती हैं।

८. (i) **राहु शुभ हो तो** अपनी दशा में सब प्रकार की भलाई करता है, महान राज्य देता है। धन तथा कर्म की प्राप्ति पुण्य तीर्थों की यात्रा, ज्ञान तथा प्रभाव आदि को देता है।

(ii) **राहु यदि अशुभ हो तो** सर्प विष से भय, रोग, शस्त्र तथा अग्नि से भय, नीचों का विरोध, वृक्ष से गिरना तथा शत्रु से पीड़ा देता है।

९. (i) **केतु यदि शुभ हो तो** अपनी दशा में विजय, क्रूर कार्य द्वारा धन प्राप्ति, अन्य देश के राज्य द्वारा भाग्य, पद्य रचना का आरम्भ करना तथा शत्रुनाश, अनेक प्रकार के रत्न की प्राप्ति तथा घर पर मोटर देता है।

(ii) **केतु यदि अशुभ हो तो** महान कष्ट, असफलता, धन हानि, रोग, टी० बी० ब्राह्मण वर्ग से द्वेष तथा महान मूर्खता का कार्य देता है।

राहु तथा केतु सम्बन्धी अन्य योग

१. यदि राहु या केतु ५ या ९वें हों और द्वितीयेश या सप्तमेश से युक्त या दृष्ट हों तो अपनी दशा में मृत्यु देते हैं।

२. यदि राहु या केतु २ या ७ में स्थित हों और ५,९ भाव के स्वामी की युति या दृष्टि हो तो धन तथा आयु को देते हैं।

संतान योग

१. लग्न से तृतीय स्थान में बुध हो तो दो पुत्र तथा तीन पुत्री देते हैं। गुरु हो तो पाँच पुत्र देते हैं। शुक्र बली होकर बैठे हों तो दो कन्या और तीन पुत्र देते हैं। शनि और चन्द्रमा साथ हों तो जातक श्याम वर्ण का और सहोदर भाई से रहित होता है।

२. अगर लग्न से सप्तम में बली होकर शुक्र हो तो दो कन्या और तीन पुत्र होते हैं।

३. पंचम में सूर्य हो तो एक राजा पुत्र, मंगल हों तो तीन पुत्र, बुध हो तो चार पुत्री, गुरु हो तो पांच पुत्र, शुक्र हो तो सात पुत्री, चन्द्रमा हो तो दो पुत्री तथा शनि हो तो सात बच्चे देते हैं। इसमें अधिकांश पुत्रियां देते हैं।

४. एक मतानुसार पंचम में मंगल हो तो पुत्री का जन्म नहीं होता।

५. पंचम में धनु या मीन राशि हो और गुरु की दृष्टि न हो तो पुत्र या पुत्री कुछ नहीं होता। अगर गुरु की दृष्टि पड़ेगी पंचम पर, तो एक पुत्र फल की प्राप्ति हो सकती है।

अन्ध योग

सिंह लग्न में जन्म हो और उसमें शुक्र व शनि हो तो जातक अन्धा होता है।

अधियोग

यदि चन्द्रमा से छठा, सप्तम, आठवाँ स्थान सभी शुभ ग्रह हों और पाप ग्रहों का प्रभाव न हो तो यह योग होता है। ऐसा व्यक्ति विख्यात धनी, यशस्वी वाहनादि से युक्त, शुभ पुत्रों, स्त्रियों वाला देश देशान्तर में यशस्वी होता है।

जन्म लग्न फल

१. मेष

इस लग्न में जन्में व्यक्ति का कद मध्यम होता है। लाल गौर वर्ण का, तीक्ष्ण नेत्रवाला, सफेद दांत वाला, पूर्ण साहसी, राज सम्मान तथा प्रसिद्धि पाता है।

२. वृष

इस लग्न में जन्में व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से मजबूत, गौर वर्ण चेहरा एवं हाथ लम्बा, ललाट ऊंचा होता है। कद का लम्बा, आकर्षक घुंघराले बालों वाला संगीत एवं काव्य प्रेमी, गम्भीर चिंतक तथा हँसमुख रहने वाले जिद्दी स्वभाव के होते हैं।

३. मिथुन

इस लग्न में जन्मा व्यक्ति लिखने पढ़ने का शौकीन, कठिन परिश्रमी, नवीन कार्य करने में प्रयत्नशील, बात करने में निपुण, लम्बे कद का, हिम्मती तथा काम निकालने में चतुर होता है। यह अच्छे बुरे सभी विचार वालों के साथ घुलमिल जाता है।

४. कर्क

इसमें जन्मा व्यक्ति लम्बे कद का, गौर वर्ण वाला, जिद्दी, तीव्र बुद्धिवाला, नया कार्य करने वाला, न्यायशील, ईमानदार एवं जनता का प्रेमी होता है। जनता की सेवा हेतु नेतृत्व करता है। बड़ा त्यागी होता है। खतरे से खेलना इसका शौक होता है। बचपन में माता का समीप्य बड़ा कम पाता है तथा कठिनता से लड़कपन बीतता है।

५. सिंह

इसमें जन्मा व्यक्ति मध्यम कद का, गोरा, चौकोर गोल मुखवाला, क्रोधी, लाल नेत्रवाला, अल्प केशवाला, पूर्ण साहसी, आकर्षक, विजयी होता है। सूर्य

के समान तेज, दुश्मन पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। जहाँ इसका सम्मान नहीं होता, उस स्थान, व्यक्ति से बिल्कुल ही अलग रहता है।

६. कन्या

जातक मध्यम कद का, उभरा सीना वाला, तीखे नाक वाला, सघन केश वाला, गौर वर्ण का होता है। पढ़ने में कम रुचि रखता है। राजनीति में स्वार्थी होता है तथा कूटनीति अधिक करता है।

७. तुला

जातक मध्यम कद का, चौड़े चेहरे वाला, कम केश वाला शांतिप्रिय, सत्यवादी बड़ों की इज्जत करने वाला तथा धर्म का कट्टर विरोधी होता है, पढ़ने में तेज, संगीत का शौकीन, जनता का प्रेमी, आदर्शवादी एवं घुंघराले बाल वाला होता है।

८. वृश्चिक

जातक का कद न अधिक ऊंचा और न अधिक छोटा होता है। शरीर भरा हुआ होगा। शक्ल गौर वर्ण की, तामसी प्रकृति का, सम्मोहन एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व वाला, पर स्त्रियों के प्रति आसक्त, पर पत्नीव्रता, विद्वान, स्वार्थी प्रकृति का, परिवार का मुखिया होता है। अपने जीवन में धन कमाता है। धार्मिक होता है पर त्याग की मात्रा अधिक होती है।

९. धनु

जातक काँचन गौर वर्ण का, लम्बा शरीर वाला, पिंगल नेत्र एवं केशवाला, विद्वान, दूसरों का दिल जीतने वाला, माता पिता का भक्त, फैशन दिखावा से दूर, बहुत मित्रों वाला होता है। सामाजिक कार्य में रुचि लेता है।

१०. मकर

जातक छोटा कद का, बड़ा सिर वाला, फुर्तीला, पढ़ने में तेज, न । कार्य करने वाला, परोपकारी, अपने से बड़ों का आदर करने वाला त्यागी, मोटा दांत एवं कम बालों वाला होता है। बचपन तकलीफ में बीतता है। पितृ एवं मातृ

भक्त होता है। गुप्त ज्ञान की बातें जानने के शौकीन होंगे। समाज में एवं स्त्रियों में लोकप्रिय होगा। अपने परिवार को सामाजिकता के कारण नहीं समझेगा। ईश्वरीय मदद मिलती रहेगी।

११. कुम्भ

जातक लम्बा शरीर वाला, स्थूल बदन, कम गौर वर्ण का होता है। स्पष्टवादिता, सहानुभूति, दया एवं परोपकार इनका विशेष गुण होता है। कार्य करने में दक्ष तीव्र बुद्धिवाला, शौकीन तथा सबको सन्तुष्ट करने वाला होता है। नीच जाति की संगति अधिक पसन्द करेगा तथा नेता बनने की इच्छा होती है।

१२. मीन

लम्बा कद वाला, घना एवं घुंघराले केशवाला, सुन्दर नासिका एवं आंख वाला, विशाल आकृति का होता है। सहनशील, दयालु तथा छोटे बड़ों का सम्मान करने वाला होता है। दार्शनिक, काव्य प्रमी एवं नाट्य प्रेमी होता है।

ज्योतिष से सम्बन्धित योग

१. गजकेशरी योग—चन्द्रमा से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम भाव में गुरु बैठा हो, तो यह योग होता है। डा० राजेन्द्र प्रसाद, भूतपूर्व राष्ट्रपति
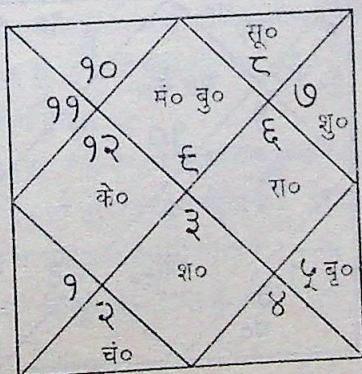
की जन्मकुण्डली में यह योग देखा जा सकता है ।

२. सेनाध्यक्ष योग—चन्द्रमा से तीसरे मंगल, मंगल से सप्तम शनि, शनि से सप्तम शुक्र, शुक्र से सप्तम गुरु हो तो यह योग होता है ।

३. मालव्य योग—शुक्र अपनी राशि का होकर या अपनी उच्च राशि का होकर लग्न, चतुर्थ, सप्तम या दशम में हो तो यह योग होता है । यह भी राजयोग है । पं० जवाहर लाल नेहरू की जन्मकुण्डली में यह योग है ।
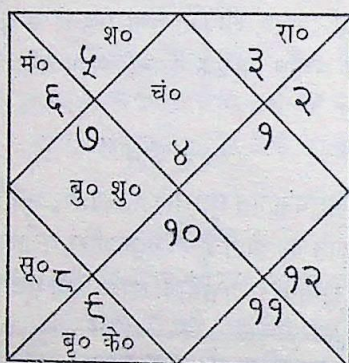
४. भद्र योग—बुध अपनी राशि का या अपनी उच्च राशि का होकर लग्न, चतुर्थ, सप्तम या दशम भाव में हो तो यह राज योग होता है । श्री लाल
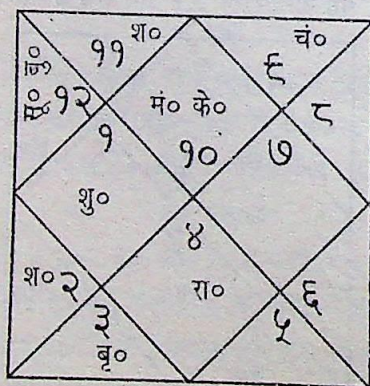
हादुर शास्त्री की जन्म कुण्डली में यह योग देखा जा सकता है।

५. **रूचक योग**—मंगल अपनी राशि का या अपनी उच्च राशि का होकर लग्न, चतुर्थ, सप्तम या दशम में हो तो यह योग होता है। पं० श्री वी० एन० मिश्र की जन्म कुण्डली में यह योग देखा जा सकता है।
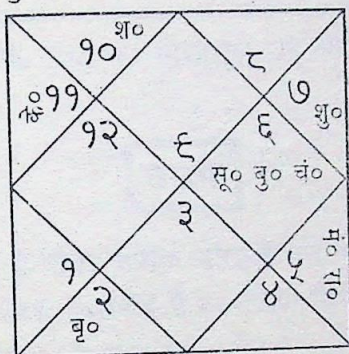
६. **चन्द्र मंगल योग**—जन्मकुण्डली में किसी भी भाव में चन्द्र, मंगल एक साथ हो तो यह योग होता है। इस प्रकार का जातक सदा स्त्रियों के सम्पर्क में होता है और उसके घर में लक्ष्मी (धन) नहीं हटती है। फिल्म अभिनेता अशोक कुमार की जन्म कुण्डली में यह योग है।

७. **गर्दव योग**—लग्न वृष और तुला हो तथा लग्नेश शुक्र लग्न चतुर्थ, सप्तम या दशम में बृहस्पति के साथ हो तो यह योग होता है। ऐसा जातक देश-विदेश में गायक के रूप में प्रसिद्धि पाता है। लता मंगेशकर की जन्मकुंडली में यह योग है।

८. **नौका योग**—लग्न से सप्तम स्थान तक लगातार सभी ग्रह (राहु एवं केतु को छोड़कर) स्थित हों तो यह योग होता है। ऐसा जातक नौ सेना का कप्तान एवं पनडुब्बी में प्रवीण कर्मचारी होता है।

९. **राज राजेश्वर योग**—कर्म लग्न हो तथा उसमें चन्द्रमा हो एवं सूर्य

नवम में हो तो यह योग होता है।

१०. राज योग—दशम में सूर्य हो तथा बुध हो एवं छठे में राहू हो तो जातक बहुत से मनुष्यों का नेता होता है।

ज्योतिष में मुहूर्त विचार

यात्रा में चन्द्रमा, नक्षत्र, वार, दिशाशूल, राहु आदि का विचार करना आवश्यक होता है।

चन्द्रमा

अपनी राशि से चौथा, आठवाँ, बारहवाँ चन्द्रमा तथा घातक चन्द्रमा प्रत्येक कार्य में अवश्य वर्जनीय है। दक्षिण दिशा में यात्रा के लिए बारहवाँ चंद्रमा अशुभ नहीं माना जाता।

उत्सवे अभिषेके च, जनने व्रत बंधने।
पाणिग्रहे च यात्रायां, चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥

— मुहूर्त प्रकाश

स्त्री और पुरुष के लिए घातक चन्द्रमा अलग-अलग हैं। नीचे कोष्ठक में १२ राशियों के घातक चन्द्र दिए जाते हैं।

घातक चन्द्र

राशि	मेष	वृष	मिथु	कन्या	सिंह	कर्क	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
पुरुष	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चि	वृश्चि	मीन	धनु	कन्या	वृश्चि	मिथुन	कुम्भ

चन्द्रवास

चन्द्रमा १२ राशियों में घूमता है। दिशाएँ चार हैं। एक दिशा में तीन-तीन राशियों पर चन्द्रमा का वास होता है। मेष राशि का वास पूर्व में, वृषभ राशि का दक्षिण में, मिथुन राशि का पश्चिम में और कर्क राशि का उत्तर में, इसी क्रम से सिंह राशि पूर्व में और मीन राशि उत्तर में होती है; फलित की भाषा में मेष, सिंह कन्या और मकर राशि पर दक्षिण में, मिथुन तुला, व कुम्भ राशि पर पश्चिम में, कर्क, वृश्चिक व मीन राशि पर उत्तर में चन्द्रमा होता है।

यात्रा में जिस दिशा में ज़ाना हो, उसके बाएं और पीठ पीछे का चन्द्रमा पूर्णत: वर्जनीय होता है। सम्मुख और दाहिने चन्द्रमा में भी धातक है और चौथा, आठवाँ तथा बारहवाँ वर्जनीय होता है। चन्द्रमा दो दिन यानी १३५ घटी को भोगने के बाद दूसरी राशि में आ जाता है। यदि किसी दिन सम्मुख या दाहिना चन्द्रमा न हो तो उसकी सूक्ष्म गति से दिशा का ज्ञान कर लें। १७ घटी पूर्व में, १५ घटी अग्नि कोण में, २१ घटी दक्षिण में, १६ घटी नैर्ऋत्य कोण में, १९ घटी पश्चिम में, १८ घटी वायव्य कोण में, १५ घटी उत्तर में और १४ घटी ईशान कोण में चन्द्रमा भ्रमण करता है। जिस राशि में चन्द्रमा हो, उससे गिनें।

गोचर ग्रहों में जब-जब अपनी राशि से ४ या, ८वाँ और १२वाँ चन्द्रमा आता है वे दिन उस राशि वालों के लिए अशुभ होते हैं। इससे प्रत्येक राशि वाला एक मास में अपने अशुभ दिनों का ज्ञान कर सकता है।

नक्षत्र भोजन

त्रैलोक्य प्रकाश में यात्रा के लिए भिन्न-भिन्न नक्षत्रों का भिन्न-२ भोजन बताया गया है। वह इस प्रकार है—

नक्षत्र	भोजन
कृतिका	५/७ तोला दही
आर्द्रा	२/३ तोला ताजा मक्खन
पुनर्वसु	२/४ तोला घृत
पुष्य	खीर
चित्रा	पकाई मूंग की दाल
स्वाति	मीठा फल
श्रवण	खीर
शतभिषा	पकाई तुबर की दाल
भरणी	पके चावल में तिल मिलाकर

लग्न का कालमान

लग्न	भोग काल	
	घटी	पल
मेष व मीन	३	४५
वृष व कुंभ	४	१५
मिथुन व मकर	५	५
कर्क व धनु	५	१४
सिंह व वृश्चिक	५	४२
कन्या व तुला	५	३२

मीन और मेष लग्न ३ घटी ४५ पल भोगता है। वृषभ और कुम्भ लग्न ४ घटी १५ पल भोगता है। मिथुन और मकर लग्न ५ घटी ५ पल भोगता

है। धनु तथा कर्क लग्न ५ घटी ४१ पल भोगता है। सिंह तथा वृश्चिक लग्न ५ घटी ४२ पल भोगता है। कन्या और तुला लग्न ५ घटी ३२ पल भोगता है। सारिणी बनाकर भी दे रहे हैं— देखें पृ० ८१ ।

समस्त शुभ कार्यों में वर्जनीय

जन्म नक्षत्र, जन्म मास, जन्मतिथि, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति अमावस्या तिथि, तिथिक्षय, तिथिवृद्धि, क्षयमास, कुलिक योग, अधयाम, अर्धप्रहर तथा महापात योग सभी शुभ कार्यों में वर्जनीय है।

राहु-काल

वार	समय
रविवार	४.३० से ६.०० बजे तक
सोमवार	७.३० से ९.०० बजे तक
मंगलवार	३.०० से ४.३० बजे तक
बुधवार	१२.०० से १.३० बजे तक
गुरुवार	१.३० से ३.०० बजे तक
शुक्रवार	१०.३० से १२.०० बजे तक
शनिवार	९.०० से १०.३० बजे तक

यात्रा में ग्राह्य नक्षत्र

दोहे—अश्विनी पुष्य पुनर्वसु, हस्त धनिष्ठा जाण।
श्रवण मित्र मृगसिर, नवम रेवति शुभ उर आण ॥१॥
मूल रोहिणी शतभिषा, तीन उत्तर सुजाण।

अरु पूर्वा ज्येष्ठा सहित, मध्यम गमन बखान ॥ २ ॥

हस्त, श्रवण रेवती, मृगशिरा और पुष्य सब दिशाओं में सिद्धिदायक है। पूर्व में हस्त, दक्षिण में श्रवण, पश्चिम में रेवती और उत्तर में मृगशिरा जाना अच्छा है।

पुष्य में प्रस्थान हमेशा लाभदायक।

दोहा— चौथ नवमी दौदस, जो शनिवारी होय।
एकज कामे सिरया, सो-सो कामज होय ॥

यात्रा में वर्ज्य नक्षत्र

अश्लेषा आर्द्रा मघा, स्वाति कृत्तिका राज।
भरणी चित्रा विशाखा, अष्ट वर्ज यात्राज। ३।
अश्लेषा मघा पूर्व जे जाय।
लक्ष्मी सरसेवी जे पाय।
अश्विनी भरणी दक्षिण बारे।
घर बैठा काल हकारे।
पुख पुनर्वसु पश्चिम लिया।
ते नर काल अपूछी लिया।
उत्तर सहित उत्तरा नाचे।
सर्प रे मुख अंगुली घाले।
रवितुल चंद्र गमन ना कीजे, वृश्चिक सोम पाय ना भरीजे।
वैरी अर्थ कर्क मंगार, बुध जीव मीन को काल।
शुक्र मकर लाभ न होय, सिंह शनि चलै नहिं कोय।
ए सात वार षट् चन्द्रमा, जो नर जाणे भेद।
ते नर पड़े ना कष्ट में, इस भाषित सहदेव।

उत्तर में हस्त, दक्षिण में चित्रा, पूर्व में रोहिणी, पश्चिम में श्रवण कदापि नहीं लेना चाहिए।

लोक प्रचालित निषेध

जेठ की एकम, अषाढ़ की दूज, सावन की तीज, भादवे की चौथ, आसोज की पंचम, कार्तिक की छट्‌ठ, मधसर की सप्तमी, पौष की अष्टमी, माघ की नवमी, फाल्गुन की दशमी, चैत की एकादशी, बैशाख की द्वादशी यात्रा में कभी नहीं लेना चाहिए।

आवश्यक यात्रा में त्याज्य घड़ी

पूर्वासु षोडशैवाद्या:; कृत्तिका स्वेकविंशति: ।
मघास्वेकादशत्याज्या, भरण्या सप्तनाडिका ॥
स्वात्याश्लेषा विशाखासु, ज्येष्ठायाश्च चतुर्दश ।
पापलग्नबले शेषनाडीष्टावश्यके सति ॥

ज्येष्ठा, मूल, आश्लेषा, मघा, रेवती की दो घड़ी आदि और दोघड़ी अन्त की त्याज्य हैं। हर तिथि, वार, नक्षत्र, चंद्रमा की अन्तिम दो घड़ी वर्जनीय हैं।

तिथि विषयक चिंतन

कृष्णा च प्रतिच्छष्ठा नो शुक्ला गमनादिषु ।
द्वितीया कार्यसिद्धयै स्यात् तृतीया क्षेमसंपदे ॥
चतुर्थी क्लेशदा ज्ञेया, लाभदा पंचमी तथा ।
व्याध्यर्तिदायिनी षष्ठी, सप्तमी भोगभोज्यदा ॥
रोगदा चाष्टमी ज्ञेया, नवमी मृत्युदा सदा ।

दशमी लाभदा नित्यं, हेमदैकादशी स्मृता ॥
प्राणहृत् द्वादशी प्रोक्ता, सर्वसिद्धा त्रयोदशी ।
शुक्ला चतुर्दशी नेष्टा कृष्ण पक्षे विशेषत: ॥
पूर्णिमा मध्यमा प्रोक्ता, त्याज्यो दर्शस्तु सर्वथा ।
तिथीनाँ फलमेतद्धि ज्ञातव्यं गमने बुध: ॥

सूर्यवास

मीन, मेष, वृषभ राशि को पूर्व दिशा में, मिथुन, कर्क, सिंह राशि को दक्षिण में, कन्या, तुला, वृश्चिक राशि को पश्चिम दिशा में धनु , मकर, कुम्भ राशि को उत्तर दिशा में सूर्य का वास है ।

दिशा-विदिशा में सूर्य प्रहर प्रमाण

अग्नि, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, पूर्व—इन आठों दिशा-विदिशा में सूर्य अनुक्रम से एक-एक पहर रहता है ।

सूर्य फल

दक्षिण सूर्य हो तो गमन करना, बाएं तरफ हो तो नगर प्रवेश करना सुखकर है । सम्मुख सूर्य हो तो लाभदायक होता है और पीछे सूर्य हो तो दु:खकारक होता है ।

यात्रा विचार

१ २ योजन की यात्रा मित कहलाती है ।इसमें योगिनी, दिशाशूल, पंचांग और समय का दोष वर्जना चाहिए ।

- २५ योजन की यात्रा सम कहलाती है ।इसमें लग्न दोष को भी वर्जना चाहिए ।
- २५ योजन से अधिक की यात्रा वृहत् कहलाती है ।इसमें सब दोषों को और कुयोगों को वर्जना चाहिए ।
- एक दिन में यात्रा करके वापस आने से वार, नक्षत्र, दिशाशूल, सम्मुख शुक्र आदि का विचार नहीं करना चाहिए ।
- एक दिन में यात्रा व प्रवेश हो तो प्रवेश देखना चाहिए ।प्रवेश के बाद यात्रा व यात्रा के बाद प्रवेश नौवें दिन, नौवीं तिथि व नौवें नक्षत्र में करें ।

प्रस्थान

प्रस्थान रखने का स्थान निकट से निकट १० धनुष से पहले नहीं और दूर में ५०० धनुष से अधिक नहीं । प्रस्थान रखने के बाद राजा को १० दिन मांडलिक को ७ दिन, सामान्य व्यक्ति को ५ दिन से पहले प्रस्थान करना चाहिए । श्रवण नक्षत्र में प्रस्थान रखा हो तो उसी दिन प्रस्थान स्थल से आगे जाना चाहिए । धनिष्ठा, पुष्य और रेवती में किया हो तो दूसरे दिन, अनुराधा, मृगशिरा में तीसरे दिन, हस्त में चौथे दिन, शेष नक्षत्रों में पाँचवें दिन प्रस्थान करना चाहिए ।

सप्ताहान्येव पूर्वस्यां, प्रस्थानं पंच दक्षिणं ।
पश्चिमे त्रीणि शस्तानि, सौम्यायां तु दिन द्ववम् ।

प्रस्थान में रखने योग्य वस्तु

छत्र, धनुष, खड्ग, शय्या, आसन, आयुध, बख्तर, दर्पण अक्षयमाला, पुस्तक, श्वेत-वस्त्र आदि । काला वस्त्र तथा जीर्ण वस्त्र नहीं रखना चाहिये ।

प्रस्थान के दिन वर्ज्य पदार्थ

कोप, हजामत, स्त्री संग, श्रम, मांस, गुड़, रुदन, दूध, मधु, क्षार, अभ्यंग, स्नान अन्य विषयक भीति, श्वेत अतिरिक्त दूसरे वस्त्र, वमन, तेल, मिर्च, प्रस्थान काल में वर्जना चाहिए। तेल व दूध से ३ दिन हजामत ५ दिन और स्त्री संग ७ दिन पहले से छोड़ना, शेष उसी दिन छोड़ना चाहिये। यदि सामर्थ्य न हो तो एक दिन पहले सब वस्तुओं का त्याग आवश्यक है।

— त्रिकाल ज्ञानदर्शक, भाग २, पृ० १९० से

दिशाशूल

पूर्व दिशा में सोमवार व शनिवार को, दक्षिण दिशा में गुरुवार को पश्चिम दिशा में रविवार व शुक्रवार को, उत्तर दिशा में बुध और मंगल वार को दिशाशूल का वास होता है, यात्रा में दिशाशूल को बाएं और पीठ पीछे रखा जाता है, सम्मुख और दाहिने नहीं। यदि दिशाशूल सम्मुख या दाहिने हो और उस वार की उस दिशा में जाना पड़े तो वस्तु खाकर दिशाशूल को भंग किया जा सकता है। किस दिन किस वस्तु को खाना चाहिए, इसको नीचे दिया जा रहा है।

दिशाशूल भंग वस्तु सेवन

रवि — घृत, तंबोल, चन्दन
चन्द्र — पय, दर्पण, दही
मंगल — गुड़, धनिया, माटी
बुध — तिल, गुड़, माखन
गुरु — जौ, राई, आटा

शुक्र — दधि, करबो, तेल

शनि — माष (उड़द) वाय बिडंग, खोल, तिलक।

विजय योग

दिन में जिस समय दूसरा प्रहर पूर्ण होता है उससे २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद का काल विजय मुहूर्त कहलाता है। अशुभ से अशुभ दिन में भी यह समय यात्रा के लिए प्रशस्त माना गया है।

शिव घटिका मुहूर्त

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगं करणं तथा।
शिवस्याज्ञां समादाय, देवकाय विचिन्तयेत ॥१ ॥

इसमें तिथि, नक्षत्र, योग और करण को देखने की आवश्यकता नहीं है जिस मास को देखना हो उस मास में उस वार को देखें और उसके अनुसार योग को देखें। एक दिन में ३० घटी होती हैं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक ३० घटी मानकर कहा जाता है। दिनमान कम या बड़ा हो तो उस हिसाब से समझें। एक घड़ी २४ मिनट की होती है।

माहेन्द्र विजयो नित्यमभृत्ते कार्यशोभनम्।
वक्रे गतिविलम्बः स्याच्छून्ये चमरणं भयम् ॥

माहेन्द्र योग में जाने से विजय, अमृत में सिद्धि, वक्र में गति की विलम्बता और शून्य में मृत्यु। माहेन्द्र और अमृत—ये दो योग शुभ हैं।

महीनों से दिन रात्रि के मुहूर्त

अब महीनों से दिन-रात्रि के मुहूर्त की सारिणीयाँ बनाकर दे रहे हैं, देखें

महीनों से दिन के मुहूर्त —१

चैत्र, वैशाख, श्रावण, भाद्रपद, माघ, फाल्गुन मास के लिए

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
माहेन्द्र २ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत ६ घटी	वक्र ४ घटी	अमृत ६ घटी	शून्य २ घटी	शून्य ४ घटी
अमृत ८ घटी	वक्र ८ घटी	शून्य २ घटी	अमृत ४ घटी	शून्य २ घटी	अमृत १६ घटी	वक्र २ घटी
वक्र १० घटी	अमृत ६ घटी	वक्र २ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ८ घटी	शून्य २ घटी
शून्य ८ घटी	वक्र ६ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत २ घटी	अमृत ८ घटी
अमृत २ घटी	अमृत ५ घटी	शून्य ८ घटी	शून्य २ घटी	वक्र ८ घटी	शून्य २ घटी	शून्य २ घटी
	शून्य २ घटी	अमृत ४ घटी	वक्र ४ घटी	अमृत ४ घटी		वक्र २ घटी
		शून्य २ घटी	माहेन्द्र २ घटी			शून्य ४ घटी
			अमृत ४ घटी			अमृत ४ घटी
						शून्य २ घटी

महीनों से दिन के मुहूर्त — २

जेठ-आषाढ़ के लिए

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
अमृत ६ घटी	अमृत ४ घटी	शून्य ४ घटी	शून्य २ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत २ घटी	माहेन्द्र २ घटी
वक्र ८ घटी	वक्र २ घटी	वक्र ६ घटी	माहेन्द्र ४ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र २ घटी	शून्य ६ घटी
अमृत ८ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत ८ घटी
शून्य २ घटी	वक्र १६ घटी	शून्य ४ घटी	वक्र ६ घटी	शून्य ४ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र १० घटी
माहेन्द्र २ घटी		वक्र ६ घटी	शून्य २ घटी	वक्र ६ घटी	अमृत ८ घटी	शून्य ४ घटी
शून्य ४ घटी		शून्य २ घटी	वक्र ४ घटी	शून्य २ घटी	शून्य २ घटी	
		अमृत ४ घटी	अमृत ४ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ४ घटी	
			शून्य २ घटी			

महीनों से दिन के मुहूर्त — ३

आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष व पौष के लिए

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शून्य ४ घटी	अमृत ८ घटी	अमृत ४ घटी	शून्य २ घटी	अमृत २ घटी	वक्र ८ घटी	शून्य ४ घटी
अमृत ६ घटी	माहेन्द्र ४ घटी	वक्र ६ घटी	माहेन्द्र ४ घटी	शून्य ४ घटी	अमृत ४ घटी	वक्र ४ घटी
वक्र ६ घटी	शून्य ६ घटी	अमृत २ घटी	अमृत ८ घटी	वक्र ६ घटी	शून्य २ घटी	शून्य ४ घटी
अमृत ६ घटी	अमृत ६ घटी	शून्य ४ घटी	वक्र ६ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत २ घटी	अमृत ८ घटी
वक्र ४ घटी	माहेन्द्र ६ घटी	माहेन्द्र ६ घटी	शून्य ८ घटी	शून्य २ घटी	वक्र ४ घटी	शून्य २ घटी
अमृत २ घटी		शून्य ८ घटी	वक्र २ घटी	वक्र ४ घटी	अमृत ६ घटी	वक्र ४ घटी
शून्य २ घटी		वक्र २ घटी		अमृत ६ घटी	माहेन्द्र ४ घटी	शून्य २ घटी
				माहेन्द्र २ घटी		माहेन्द्र २ घटी
				माहेन्द्र २ घटी घटी		माहेन्द्र

महीनों से रात्रि के मुहूर्त – १

चैत्र, वैशाख, श्रावण, भाद्रपद, माघ, फाल्गुन के लिए

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शून्य २ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ४ घटी	शून्य २ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ६ घटी
माहेन्द्र घटी	माहेन्द्र २ घटी	माहेन्द्र ४ घटी	अमृत ६ घटी	माहेन्द्र ४ घटी	शून्य २ घटी	अमृत ६ घटी
शून्य २ घटी	अमृत २ घटी	अमृत २ घटी	माहेन्द्र ४ घटी	अमृत २ घटी	अमृत ६ घटी	वक्र ४ घटी
अमृत ४ घटी	वक्र ८ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ८ घटी	वक्र ६ घटी	शून्य ४ घटी
शून्य २ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत ४ घटी	शून्य ४ घटी	अमृत ४ घटी	माहेन्द्र ६ घटी	अमृत ४ घटी
वक्र ६ घटी	शून्य ४ घटी	शून्य २ घटी	अमृत १० घटी	शून्य ४ घटी	शून्य २ घटी	शून्य २ घटी
शून्य ६ घटी	वक्र २ घटी	वक्र २ घटी		अमृत ४ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत ४ घटी
माहेन्द्र २ घटी	शून्य २ घटी	माहेन्द्र २ घटी				
अमृत [illegible] घटी		अमृत ४ घटी				

महीनों से रात्रि के मुहूर्त — २

ज्येष्ठ-आषाढ़ के लिए

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शून्य २ घटी	वक्र ६ घटी	शून्य २ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र ४ घटी	शून्य २ घटी
अमृत ८ घटी	अमृत ८ घटी	अमृत ८ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत ४ घटी	वक्र ४ घटी
वक्र ६ घटी	वक्र ८ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र ८ घटी	वक्र ६ घटी	शून्य ४ घटी	माहेन्द्र २ घटी
अमृत ६ घटी	माहेन्द्र २ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत ६ घटी	माहेन्द्र २ घटी	अमृत ४ घटी
वक्र ४ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र ६ घटी	शून्य ८ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ४ घटी	शून्य १० घटी
माहेन्द्र ४ घटी		माहेन्द्र २ घटी			अमृत ४ घटी	अमृत २ घटी
					शून्य ८ घटी	वक्र २ घटी
						शून्य ८ घटी
						अमृत ६ घटी

महीनों से रात्रि के मुहूर्त — ३

आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष व पौष के लिए

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शून्य ४ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र ६ घटी	शून्य २ घटी	शून्य ४ घटी	वक्र ४ घटी	शून्य २ घटी
अमृत ४ घटी	अमृत ८ घटी	अमृत ८ घटी	अमृत १० घटी	वक्र ४ घटी	शून्य २ घटी	वक्र ४ घटी
वक्र ६ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र ६ घटी	वक्र ८ घटी	शून्य २ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत ६ घटी
अमृत ६ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत ४ घटी	अमृत ६ घटी	अमृत ६ घटी	शून्य ६ घटी	वक्र ४ घटी
शून्य ४ घटी	शून्य २ घटी	शून्य २ घटी	शून्य २ घटी	वक्र ६ घटी	माहेन्द्र २ घटी	अमृत ६ घटी
वक्र ६ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ४ घटी	वक्र ६ घटी	शून्य २ घटी	शून्य २ घटी	वक्र ४ घटी
				वक्र ६ घटी	वक्र ८ घटी	अमृत ४ घटी

पृष्ठ ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४।

कुछ आवश्यक मुहूर्त

अब कुछ आवश्यक मुहूर्त दे रहे हैं इनको व्यवहार में लाना चाहिये—

विद्या आरम्भ मुहूर्त

मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मूला, हस्त, चित्रा, स्वाति, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वा-भाद्रपद, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र, रवि, बुध, बृहस्पति और शुक्रवार दिन एवं ३, ५, ६, १०, ११, १२ इनमें से कोई तिथि हो तो विद्या का आरम्भ करना शुभ माना जाता है।

बृहस्पति, शुक्र, बुध, सवार्थ सिद्धि के दायक हैं। रवि मध्यम। चन्द्रवार जड़ताकारक है। मंगल, शनि, मृत्युदायक है।

गणित शास्त्र के लिये मुहूर्त

शतभिषा, विशाखा, अनुराधा, आर्द्रा, रोहिणी, रेवती, हस्त, पुष्य नक्षत्र, गुरुवार और बुधवार को गणित विद्या सीखना शुभ माना जाता है।

व्याकरण शास्त्र के लिये मुहूर्त

रोहिणी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, मृगसर, अश्विनी, पुष्य नक्षत्र, शुक्रवार, गुरुवार और बुधवार, को शब्द प्रारम्भ करना शुभ है।

न्याय शास्त्र के लिये मुहूर्त

उत्तरा भाद्रपद, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, हस्त, अश्विनी, शतभिषा स्वाति नक्षत्रों में न्यायशास्त्र प्रारम्भ करना शुभ है।

जैन विद्या के लिये मुहूर्त

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, पूर्वा भाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, भरणी, पुनर्वसु, स्वाति नक्षत्र, रविवार तथा शुक्रवार को प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

शिल्प विद्या के लिये मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, राहिणी, मृगशिरा, रेवती, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, शुभ तिथि और शुक्रवार में प्रारम्भ करना शुभ है।

लिपि आरंभ के लिये मुहूर्त

शुभ तिथि, शुभ वार, (वृ० बु० श०), रेवती अश्विनी, श्रवण, अनुराधा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, नक्षत्र में प्रारम्भ करना शुभ है।

नया पात्र मुहूर्त

अश्विनी, चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिरा, हस्त, पुष्य नक्षत्र तथा गुरुवार और सोमवार में नये पात्र काम में लेना शुभ है।

वस्त्र धारण मुहूर्त

रेवय दुग पुनर्वसु दुग, पुष्य हत्थ, धनिट्ठ।
उत्तरा त्रय रोहिणी नरा, वस्त्राभरण प्रगट्ठ ॥१॥

रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तरा फाल्गुनी, रोहिणी—ये नक्षत्र पुरुष के लिए नया वस्त्र पहनना शुभ है।

हस्तादि, पंचकेश्विन्याँ, धनिष्ठायाँ, च पूषणि।
गुरौ शुक्र बुधवारे, धार्य स्त्रीभिर्नवाम्बरम्॥ २॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा और रेवती नक्षत्र, गुरु शुक्र, बुधवार को स्त्री को नया वस्त्र पहनना शुभ है।

कपड़ा पहनने के तीन वार

बुध, बृहस्पति शुक्रवार, भूलो चूको रविवार।
रविनीलो बुधपीयलो शनिकालो भोम रक्त।

हीर कहै गुरु शशि भृगु पहेरो धवला वस्त्र ॥

सूर्येचाल्पधनंव्रण: शशिदिने क्लेश: सदा भूमिजे ।
वस्त्राणां बहुता बुध सुरगुरौ विद्यागमे सम्पद: ॥
नानाभोगयुतं प्रमोद शयनं दिव्यांगनाभि: कवौ ।
सौर स्यु: खुल रोगशोककलहा वस्त्र भृते नतने ॥

औषध ग्रहण का मुहुर्त

रेव अश्विनी मूलां मृगां पुनर्वसु पुष्य हत्थ ।
चित्रा स्वातिशतभिषां श्रवण धनिष्ठा सत्य ।
अनुराहा रिसी तेरसी शुभवारां तिथि योग ।
औषध लीजै हीर कहै जिम साइ सवि रोग ।

रेवती, अश्विनी, मूला, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, शतभिषा, श्रवण, धनिष्ठा, अनुराधा नक्षत्र १, २, ३, ५, ११, १३ तिथि, सोम, मंगल, बृहस्पतिवार को औषध प्रारम्भ करना शुभ है ।

लोच करने का मुहुर्त

रवि शनि मंगलवार ए मुण्डन लोचनकर्म ।
अवरे बारे कीजे ते लोचन थाये धर्म ।
मूल उत्तरा मृग रोहिणी, भरणी कित्ति विवशाह ।
अनुराधा रिसि हीर कहै, मुंडण लोचां दाय ।
पुनर्वसो पुष्ये श्रवणं धनिष्ठायाँ ।
एतेषु चतुर्षु नक्षत्रेषु, लोचकर्म कारयेत् ।
कृत्तिकायां विशाखायाँ, मघायां भरणौ च ।
एतेषु चतुर्ष नक्षत्रेषु, लोचकर्म वर्जयेत् ।

रविवार, शनिवार और मंगलवार, मूला, तीन उत्तरा, मृगशिरा, रोहिणी, भरणी, कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा इन नक्षत्रों में लोच कराना चाहिए। पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में लोच कराना चाहिए।

संवारा कराने का मुहूर्त

पुष्यो हस्तोऽभिजिदविनी भरणी तथा।
एतेषु च नक्षत्रेषु, पादपोपगमनं कुर्यात।

गुरु दर्शन या राजदर्शन मुहूर्त

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रेवती अश्विनी, ज्येष्ठा, श्रवण, अनुराधा व शुभवार में गुरुदर्शन लाभप्रद होता है।

संगीत सीखने का मुहूर्त

क्रूर वारां भद्रा भरणी, मास अति संक्रान्ति।
पख अंधो बुध सुध तजी, रागिणी कीजे तंति।

जातकर्म और नामकरण मुहूर्त

संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात तो छोड़कर १, २, ३,५,७,१० ११, १३, इन तिथियों में, जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध, गु और शुक्रवार को मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस् अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा इ नक्षत्रों में, लग्न से, १, ४, ५, ७, १०वें स्थानों में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११ पाप ग्रह हो तो शुभ होता है।

स्फुट मुहूर्त

त्रिषूत्तरासु रोहिण्यां च कुर्यात् शक्षस्य निष्क्रमणम् ।
शैक्षोपस्थापनं कुर्यात, अनुज्ञां गणिवाचकयो: ॥
गणसंग्रह कुर्यात गणधरं चैव स्थापयेत ।
अवग्रहं वसति स्थानं च, स्थावराणि प्रवर्तयेत ॥
पुष्यो हस्तोऽभिजित अश्विनी च तथैव च ।
चत्वारिध क्षिप्रकर्तणि, कार्यारम्भेषु शोभनानि ॥
विद्यानां धारणं कुर्यात, ब्रह्मयोगाश्च साधयेत ।
स्वाध्यायं चानुज्ञां च, उद्देशं च समुद्देशम ॥
आर्द्राश्लेषा ज्येषठा, मूलं चैव, चतुर्थम ।
गुरौ: कारयेत प्रतिमां, तप: कर्म च कारयेत ॥

प्रवेश के लिए मुहूर्त

मंगल और रविवार, चर लग्न वर्जनीय है । चौथे घर में क्रूर ग्रह नहीं होने चाहिए, सौम्य न हो तो अच्छा है । हस्त, अश्विनी, अनुराधा, चित्रा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी, पुष्य, मृगशिरा, मूला, रेवती नक्षत्र शुभ हैं ।

दीक्षा के लिए मुहूर्त

मास—वैशाख, श्रावण, आसोज, कार्तिक, माघ और फाल्गुन ।
तिथि—शुक्ल पक्ष—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, कृष्ण पक्ष ।
वार—गुरु, बुध, शुक्र, सोम, रवि, शनि ।

नक्षत्र—३ उत्तरा, रोहिणी, हस्त, धनिष्ठा, शतभिषा, स्वाति, श्रवण, पुनर्वसु, अनुराधा, पूर्वाभाद्रपद, पुष्य, मूला, रेवती, अश्विनी ।

लग्न—वृषभ, मिथुन, कन्या, सिंह, तुला, धनु और मीन । लग्न से ३, ६, ११वें घर में पाप ग्रह चाहिए । शनि की दृष्टि शुक्र पर होनी चाहिए ।

किसी आचार्य का मत है कि लग्न में शुक्र हो या लग्न शुक्र का नवमांश हो, या शुक्रवार हो, वृषभ या तुला लग्न हो या शुक्र की लग्न पर दृष्टि हो तो दीक्षा वर्ज्य होती है । उस समय दीक्षा नहीं देनी चाहिए । चैत्र और जेठ में दीक्षा नहीं देनी चाहिए, विघ्नकारक होती है ।

विश्वाज्ञान

दीक्षा में विश्वा जानना भी आवश्यक है । लग्न से सूर्य ३, ६, ८, ११ वें घर में हो तो साढ़े तीन विश्वा । चन्द्रमा २, ३, ११वें हो तो ५ विश्वा । इस प्रकार सब ग्रहों से विश्वा जानकर योग ज्ञात करना । यदि १६ से २० विश्वा हो तो दीक्षा का समय उत्तम है । ११ से १६ तक हो तो मध्यम । १० से नीचे हो तो सामान्य । ७ से नीचे हो तो अच्छा नहीं है ।

नवग्रहों का विश्वा यन्त्र

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	२	३	१ से ६	१ से ६	१, २	३	३	३
६	३	६	९	९	४, ५	६	६	६
८	११	८	१०	१०	९	८	८	८
११	×	११	११	१०,११	११	११	११	११
३.५	५	१.५	२	३	२	१.५	१.५	१.५

शनि की साढ़े साती

जन्म राशि से १२वीं, पहली और दूसरी राशि तक शनि रहने से वह साढ़े सात वर्ष का होता है। प्रत्येक राशि में शनि अढ़ाई वर्ष का होता है।

शनि १२वें रहता है तब व्यय की मात्रा अधिक, अकस्मात् हानि, प्रदेशवास और अस्वस्थता होती है।

शनि जब जन्म राशि का होता है तब शरीर की कान्ति एवं स्वास्थ्य में हानि, चित्त में अशान्ति, धन व्यय अधिक या हानि, कार्यों में बाधा होती है।

शनि जन्म में दूसरा होता है तब बन्धु वर्ग से अनायास कलह, कुटुम्बीय जनों को रोग अथवा किसी की मृत्यु सम्भव होती है।

साढ़े साती में मेष राशि वाले के ढाई वर्ष के बीच के; कर्क, वृषभ राशि वाले के प्रथम; धन, मकर, सिंह राशि वालों के प्रथम ५ वर्ष उसमें प्रथम के २.५ वर्ष विशेष, मिथुन राशि वालों के ढाई वर्ष अन्त के तुला, कुम्भ राशि वालों के अन्त के पाँच वर्ष उसमें ढाई विशेष, मीन राशि वालों के साढ़े सात वर्ष उनमें अन्त के ढाई वर्ष विशेष अशुभ व हानिकारक होते हैं।

पृथ्वी सुती बैठी देखने की विधि

सुदी १ से तिथि, रविवार से वार और अश्विनी नक्षत्र से नक्षत्र मिलाकर तीनों का योग करके चार का भाग दें। शेष १ रहे तो पृथ्वी उठी, २ बचे तो बैठी, ३ रहे तो सुती और शून्य बचे तो जागती। इस प्रकार पृथ्वी को देखकर शुभ कार्य करना। सुती अथवा बैठी शुभ है, उठी और जागती अच्छी नहीं।

सर्वार्थ सिद्धि योग

रविवार को—हस्त, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य,

अश्विनी ।

सोमवार को—श्रवण, रोहिणी, मृँगशिरा, पुष्य, अनुराधा ।

मंगलवार को—अश्विनी, उत्तरा भाद्रपद, कृत्तिका, आश्लेषा ।

बुधवार को—रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा ।

गुरुवार को—रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य ।

शुक्रवार को—रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुर्नवसु, पुष्य ।

शनिवार को—श्रवण, रोहिणी, स्वाति ।

स्थिर योग

४, ८, ९, १३, १४ इन तिथियों में गुरु या शनिवार ।

नक्षत्र—कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, उत्तराफाल्गुनी, स्वाति ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा, रेवती इनके संयोग से स्थिर योग बनता है ।

इस योग में अनशन, व्रत, व्याधि, शत्रुशमन, युद्ध समाप्ति तथा सन्धि करना अच्छा होता है ।

राजयोग

तिथि—२, ७, १२, ३, १५ ।

वार—सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ।

नक्षत्र—मृगशिरा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, धनिष्ठा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, भरणी ।

इन ९ नक्षत्रों में कोई नक्षत्र हो, इन वारों में कोई वार तथा इन तिथियों में कोई तिथि हो तो राजयोग बनता है । राजयोग में ग्रह प्रवेश, नवीन मित्रता, विद्यारम्भ, सत्कार्य और राज्याभिषेक करना श्रेष्ठ है ।

कुमार योग

तिथि—१, ५, ६, १०, ११।

वार—सोम, मंगल, बुध, शुक्र।

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूल, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद। इन तिथि, वार और नक्षत्रों में कोई तिथि, वार नक्षत्र हो तो कुमार योग बनता है। दूषित दिन होने पर भी यह कुमार योग दीक्षा, प्रतिष्ठा, विवाह, यात्रा, आरोग्य (औषधि आदि में प्रयोग), युद्ध आदि शुभ कार्यों में सिद्धि देने वाला है। कुमार योग में कार्य करने से लाभ होता है। (मूला और पूर्वाभाद्रपद अन्य ग्रन्थों में नहीं है।)

कालमुखी योग

पंचमी को मघा, चौथ की तीनों उत्तरा, नवमी को कृत्तिका, तृतीया को अनुराधा, अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र हो तो कालमुखी योग बनता है।

ज्वालामुखी योग

प्रतिपदा को मूला, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृत्तिका, नवमी को रोहिणी, दशमी को आश्लेषा हो तो ज्वालामुखी योग बनता है। इस योग में बालक जन्मा हो तो वह दीर्घकाल तक जीवित नहीं रहता है घर बनाया जाय तो वह घर गिर पड़ता है। शुभ कार्यों में यह सर्वथा त्याज्य है।

रवियोग

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनते हुए जो ४, ६, ९, १०, १३ या २०वां नक्षत्र हो तो उस समय रवि योग होता है। रवियोग सब योगों में प्रबल माना गया है। इसको सिंह की उपमा दी गई है। तिथि को एक गुणा, नक्षत्र ५ गुणा, वार ८ गुणा, करण १९ गुणा, योग ३२ गुणा, तारा ६० गुणा, चन्द्र १०० गुणा, लग्न १००० गुणा, रवियोग लाख गुणा बलवान होता है। जिस दिन

रवियोग हो उस दिन कितना ही कुयोग क्यों न हो उस दिवस को शुभ मानकर शुभ कार्य करने में शुभ फल होता है।

सूर्य नक्षत्र से चौथी संख्या वाले नक्षत्र से रवियोग बने तो सुखकारक छठी संख्या से बने तो शत्रुनाशक, नवमी संख्या से बने तो लाभदायक, दसवीं संख्या से बने तो कार्य की सिद्धि, तेरहवीं संख्या से बने तो पुत्र की प्राप्ति और बीसवीं संख्या से बने तो राज्य का सुख मिलता है।

भस्मयोग

सूर्यर्क्षात् सप्तमरुक्षं भस्मयोगं तु तद भवेत्।
यत् किंचित क्रियते कार्य सत्सर्वं भस्माद् भवेत्॥

सूर्य नक्षत्र से सातवें नक्षत्र के दिन भस्मयोग होता है। सोमवार को मृगसर मंगलवार को अश्विनी बुधवार को अनुराधा, गुरुवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती और शनिवार को रोहिणी नक्षत्र हो तो अमृत सिद्धि योग बनता है।

वर्ज्य—अमृतसिद्धि योग होने पर भी वर्ज्य है। यात्रा और देशाटन में शनि और रोहिणी से होने वाला, विवाह में गुरु और पुष्य नक्षत्र से होने वाल अमृतसिद्धियोग वर्ज्य है।

विषयोग

रवि हस्त के दिन पंचमी, सोम, मृगशिरा को छट्ठ, मंगल और अश्विनी को सप्तमी, बुधवार को अनुराधा और अष्टमी, गुरु को पुष्य नवमी शुक्र और अमृतसिद्धि योग भी विषयोग बन जाता है।

सर्वांक योग

तिथि वार और नक्षत्र इन तीन अंकों को जोड़कर उसको सर्वांक योग कहते हैं इन अंकों के जोड़ में ५, ११, १३, १७, २३, २५, ३१, ३७, ४३, ४७ के अंक शुभ माने गये हैं।

बारह राशियों के लिए घात चक्र — १

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येषठ	भाद्रपद
घात तिथि	१/६/११	५/१०/१५	२/७/१२	२/७/१२	३/८/१३	५/१०/१५
घात वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूला	श्रवण
घात योग	विष्कुंभ	शुक्ल	परिध	व्याघात	धृति	शुक्ल
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव
प्रहर	१	४	३	१	१	१
पुरुष घात चन्द्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन
स्त्री घात चन्द्र	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक

बारह राशियों के लिए घात चक्र — २

राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	बैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	४/९/१४	१/६/११	३/८/१३	४/९/१४	३/८/१३	५/१०/१५
घात वार	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घात करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	४	१	१	४	३	४
पुरुष घात चन्द्र	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धन	कुम्भ
स्त्री घात चन्द्र	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

टिप्पणी—यह घातचक्र द्युत, प्रवास, मेल-मिलाप, सम्पर्क, विशिष्ट यात्रा में वर्जनीय है ।

तिथि सूर्यादि वारेषु योग सारिणी

योग	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मृत्यु योग	१/६/११	२/७/१२	१/६/११	३/८/१३	४/८/१४	२/७/१२	५/१०/१५
क्रकच	१२	११	१०	९	८	७	६
विष्कुंभ	४,१३	११, २	१, ९	१०, २	८, १५	७, १३	६, १४
हुताशन	६	७	८	९	१०	११	१२
कुलिक	७	६	५	४	३	२	१
संवर्तक	७	१३	१४	१	९	२	५
सिद्धि	×	×	३, ८, १३	२, ७, १२	५, १०, १५	१, ६, ११	४, ९, १४
यमघण्ट	१०	८	६	४	२	१४	१२
मुहूर्त	×	×	×	×	×	×	×
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
कंटक मुहूर्त	६	४		१४	१२	१०	८

नक्षत्र और वार से योग-सारिणी – १

नक्षत्र	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अश्विनी	×	×	अमृतसिद्धि	मृत्यु	यमदष्ट्रा	×	×
भरणी	वज्रमूसल	×	यमदंष्ट्रा	काण	×	×	×
कृतिका	×	×	यमदंष्ट्रा	सिद्धि	यमघंट	×	×
×	×	×	×	चर	उत्पात	वज्रमूसल	अमृतसिद्धि
×	×	×	×	×	×	यमघंट	×
×	×	×	×	×	×	यमदंष्ट्रा	×
मृगशिरा	×	अमृतसिद्धि	×	×	मृत्यु	×	×
आर्द्रा	×	चर	यमघंट	वज्रमूसल	काण	×	×
पुनर्वसु	×	×	×	×	सिद्धि	×	×
पुष्य	×	×	वज्रमूसल	×	अमृतसिद्धि	उत्पात	×
×	×	×	×	×	चर	×	×
आश्लेषा	×	×	×	×	×	मृत्यु	×
मघा	यमघंट	यमदंष्ट्रा	×	×	×	काण	×
×	×	×	×	×	×	चर	×
पू० फा०	×	×	यमदंष्ट्रा	×	×	×	×

नक्षत्र और वार से योग-सारिणी — २

नक्षत्र	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उ० फा०	×	×	यमदष्ट्रा	×	×	सिद्धि	उत्पात
हस्त	अमृतसिद्धि	×	×	×	×	×	मृत्यु, यमग
×	×	×	×	×	×	×	यमदंष्ट्रा
चित्रा	×	×	×	×	×	×	काण
स्वाति	×	×	×	×	×	×	सिद्धि
विशाखा	उत्पात	यमघंट	चर	×	वज्रमूसल	×	×
×	×	यमदंष्ट्रा	×	×	×	×	×
अनुराधा	मृत्यु	×	×	अमृतसिद्धि	×	×	×
ज्येष्ठा	काण	×	×	×	×	×	×
मूला	सिद्धि	यमदंष्ट्रा	×	यमघंट	×	×	चर
पूर्वाषाढ़ा	चर	उत्पात	×	×	×	×	×
उत्तराषाढ़ा	×	मृत्यु	वज्रमूसल	×	×	×	×
श्रवण	×	सिद्धि	×	×	×	×	×
धनिष्ठा	×	×	उत्पात	×	×	×	×
शतभिषा	×	×	मृत्यु	×	×	×	वज्रमूसल
×	×	×	×	×	×	×	यमदंष्ट्रा
उ० भाद्रपद	×	×	काण	×	×	×	×
पू० भाद्रपद	×	×	सिद्धि	×	×	×	×
रेवती	×	×	×	उत्पात	यमदंष्ट्रा	अमृतसिद्धि	×

दूसरी विधि

तिथि दूणी वार तिगुण नक्षत्र चउगुण जाण ।
छह सत्तरह अट्ठभाग देइ बधतो अंक प्रमाण ।१ ।

तिथि की संख्या को २ से गुणा कर ६ से भाग दें । शेष शून्य हो तो मरण या पीडन, अंक शेष रहे तो सुख ।

वार की संख्या को ३ से गुणा कर ६ से भाग दें । शेष शून्य रहे तो दुःख या दरिद्रता अंक शेष रहे तो विजय ।

नक्षत्र की संख्या को ४ से गुणा कर ७ से भाग दें । शेष शून्य रहे तो मृत्यु अंक शेष रहे तो विजय ।

घात चक्रम्

अब यहाँ प्रत्येक राशि के लिए घात मास, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, प्रहर, घात, चन्द्र, स्त्री व पुरुष के लिए दे रहे हैं । देखें—बारह राशियों के लिए 'घात चक्रम्' १ व २ पृ० १०५ व १०६ पर ।

तिथि व वार से बनने वाले योग

यहाँ तिथि व वार से बनने वाले योग जानने के लिए एक सारिणी दे रहे हैं । देखें—पृ० १०७ 'तिथि सूर्यादि वारेषु योग सारिणी' ।

नक्षत्र और वार से बनने वाले योग

यहां नक्षत्र व वार से बनने वाले योग के लिए एक सारिणी बनाकर दे रहे हैं देखें पृ० १०८ व १०९ पर ।

।। समाप्त ।।